चैतन्य लहरी

जुलाई – अगस्त, 2006

VISHWA NIRMALA DHARMA
UNIVERSAL PURE RELIGION

इस अंक में

1. छिन्दवाड़ा परियोजना – अनुरोध
2. श्री माताजी का 59 वाँ विवाह–वर्षगाँठ समारोह : आस्ट्रेलिया 7.4.2006
3. विलियम ब्लेक की कब्र की आश्चर्यजनक खोज
4. विलियम ब्लेक का जन्म–दिवस समारोह
   (परम पूज्य श्री माताजी का प्रवचन–लन्दन–28.11.1985)
5. सार्वजनिक कार्यक्रम, सिडनी, 6 फरवरी 2006
   (सर. सी.पी. श्रीवास्तव का भाषण)
6. मुम्बई स्वास्थ्य केन्द्र की 10 वीं वर्षगाँठ 19.2.2006
7. एक रोगी का साक्ष्य (मुम्बई स्वास्थ्य केन्द्र 19.2.2006)
8. योगेश्वर पूजा (लन्दन) 15.8.1982

चैतन्य लहरी

प्रकाशक
निर्मल इन्फोसिस्टम्ज़ एवं टैकनोलोजीज़ प्रा. लि.
प्लाट न. 8, चन्द्रगुप्त हाउसिंग सोसाइटी,
पौंड रोड, कोथरुड
पुणे - 411 029
फोन: 020- 25285232

मुद्रक
पार्थ सारथी प्रेस
A-27, Meera Bagh *(मीरा बाग)*
मोबाइल : 9810452981, 25268673, 42334321

सदस्यता के लिए कृपया निम्न पते पर लिखे:-
श्री जी.एल. अग्रवाल
निर्मल इन्फोसिस्टम्ज़ एवं टैकनोलोजीज़ प्रा. लि.
222, देशबन्धु अपार्टमैंट, कालका जी
नई दिल्ली-110 019
फोन : 26216654

आप अपने अनुभव, सुझाव, सहज सम्बन्धी लेख आदि निम्नलिखित पते पर भेजें :

श्री ओ. पी. चान्दना
N463-(जी-11), ऋषि नगर, रानी बाग
दिल्ली - 110 034
दूरभाष : 011-55356811

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी सहजयोग–ट्रस्ट
श्री माताजी का पावन जन्म–स्थल
छिन्दवाड़ा परियोजना
(सहयोग के लिए अनुरोध)

जय श्री माताजी ,

जैसे पहले भी घोषणा की जा चुकी है, हमारी परमेश्वरी माँ की कृपा से छिन्दवाड़ा स्थित श्रीमाताजी का जन्म–स्थल, सहजयोगियों एवं योगिनियों के लिए पावनतम तीर्थ, का **प. पू. श्री माताजी निर्मला देवी सहजयोग ट्रस्ट, भारत,** ने 14 जुलाई 2005 को अभिग्रहण कर लिया था। जन्म स्थान के अभिग्रहण की सभी कानूनी औपचारिकताएं पूर्ण कर ली गई हैं। अब यहाँ नियमित साप्ताहिक सामूहिक ध्यान किया जा रहा है और हवन तथा पूजाओं का आयोजन भी किया जाता है। सहजयोगी और योगिनियाँ निरन्तर इस तीर्थ के दर्शन के लिए आ रहे हैं और आगामी महीनों और वर्षों में इनकी संख्या बढ़ती ही चली जाएगी। परियोजना के आगामी चरण का शुभारम्भ अब किया जा रहा है। इसके मुख्यतः चार भाग होंगे :

1. जन्मस्थान के भवन को तीर्थ–स्थल के रूप में निरन्तर बनाए रखने के नज़रिए से इसकी मरम्मत एवं दृढ़ीकरण करना।

जन्मस्थान के मूल आकार को बनाए रखते हुए इसके नवीकरण तथा, दृढ़ीकरण के लिए भारतीय राष्ट्रीय ट्रस्ट ने संस्कृति एवं परम्परा (Culture and Heritage) पारांगत संरक्षण वास्तुकार (Conservation architect) की नियुक्ति की है।

2. तीर्थ–स्थल के आँगन में एक ध्यान–धारणा सभागार का निर्माण तथा आगन्तुकों के प्रवाह को सम्भालने के लिए एक स्मारक स्टॉल (stall) एवं अन्य आवश्यक सुविधाओं का निर्माण करना।

3. तीर्थ–स्थल के समीप ही अन्तर्राष्ट्रीय आश्रम का निर्माण करने के लिए एक विशाल भू–स्थल (16000 वर्ग मीटर क्षेत्र) का अभिग्रहण करना, और

4. विश्व भर से आने वाले सहजयोगियों / योगिनियों के लिए रिहायशी स्थान एवं सुविधाओं से सुसज्जित अन्तर्राष्ट्रीय आश्रम की योजना एवं निर्माण की रूप–रेखा बनाना। आश्रम में सांस्कृतिक कार्यक्रमों, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों के आयोजन की सुविधा के अतिरिक्त आध्यात्मिक, दार्शनिक तथा भिन्न विचारधाराओं की पुस्तकों से सुसज्जित पुस्तकालय की सुविधा भी उपलब्ध होगी। ये सभी सुविधाएं श्रेष्ठतम तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की होंगी।

अन्तर्राष्ट्रीय आश्रम सुन्दर प्राकृतिक परिदृश्य वाले स्थान पर बनाया जाएगा ताकि अत्यन्त शान्त–वातावरण प्राप्त हो सके। प. पू. श्रीमाताजी ने इस आश्रम के नाम **"प. पू. श्री माताजी निर्मला देवी सहजयोग विश्व आश्रम"** को स्वीकृति प्रदान की है।

"प. पू. श्रीमाताजी निर्मला देवी सहजयोग ट्रस्ट" के न्यासी श्री दिनेश रॉय के नेतृत्व में भारत तथा अन्य देशों के सहजयोगियों/ योगिनियों की

एक टीम, सर सी॰ पी॰ के पथप्रदर्शन में, इस परियोजना को यथार्थ रूप प्रदान करने के लिए कार्यरत है। आवश्यक मरम्मत और देख–रेख के लिए कुछ प्रारम्भिक कार्य भी शुरु किया जा चुका है। जन्म–स्थल के पुनरुद्धार एवं नवीकरण की विस्तृत योजना बनाने के लिए वास्तुकारों एवं भवन अभियन्ताओं की नियुक्तियाँ की गई है। प्रस्तावित अन्तर्राष्ट्रीय आश्रम के लिए आवश्यक भूमि अभिग्रहण करने के लिए कुछ स्थान भी देखे गए हैं।

जैसा हम सब जानते हैं, यह एतिहासिक उत्तरदायित्व है। हमारी परम–पावनी माँ का जन्म–स्थल हम सबके लिए उत्कृष्ट एवं पावनतम स्थान है। पूर्ण होने पर, जन्म–स्थल मन्दिर हम सबके लिए तथा सहजयोगियों और योगिनियों की भावी पीढ़ी के लिए महानतम तीर्थ बन जाएगा। अतः इस मन्दिर का विकास करना, अन्तर्राष्ट्रीय आश्रम के लिए भूमि अभिग्रहण करना और शीघ्रातिशीघ्र इस कार्य को पूर्ण करने के लिए वचनबद्ध होना, हम सबका परम पावन कर्त्तव्य है। पूर्ण श्रद्धा एवं प्रेम–पूर्वक, तथा हमारी माँ, गुरुओं की गुरु, सदगुरु द्वारा सिखाए गए उच्चतम सहज पारम्परिक मूल्यों के अनुरुप इस कार्य को किया जाना है। हमें ये स्वीकार करना होगा कि इस पावन परियोजना को पूर्ण करना, हमें अपनी परम् पावनी माँ के 'एकब्रह्माण्डीय परिवार' के स्वप्न को साकार करने के लिए परस्पर और भी समीप ले आएगा – एक ऐसे परिवार के स्वप्न को जिसने अपने जीवन में शाश्वत् चारित्रिक मूल्यों को स्वीकार किया है।

इस महत्वपूर्ण अवसर पर हम सभी सहजयोगियों और सहजयोगिनियों से अनुरोध करते हैं कि आर्थिक–योगदान देकर इस एतिहासिक परियोजना को सम्बल प्रदान करें। अपने सभी भाई–बहनों से हमारा ये भी अनुरोध है कि किसी भी अन्य प्रकार से, किसी भी प्रकार के कौशल से यदि वे इस एतिहासिक परियोजना में सहयोग करना चाहते हैं तो हमें सूचित करें। सभी राज्य समन्वयक गणों से प्रार्थना है कि वे इस अनुरोध को नगर–केन्द्रों तक पहुँचाएं और पूर्ण सामूहिकता को इस परमेश्वरी कार्य में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करें।

भारतीय सहजयोगियों/योगिनियों से इस परियोजना के लिए आर्थिक योगदान प्राप्त करने के लिए नई दिल्ली में केवल इसी कार्य को समर्पित एक बैंक खाता खोल दिया गया है।

अन्य देशों के सहजयोगियों / योगनियों से आर्थिक योगदान (जो कि निश्चित रूप से विदेशी मुद्रा मे होगा) लेने के लिए अनिवार्य है कि भारतीय राष्ट्रीय ट्रस्ट भारत सरकार के सम्बन्धित विभाग से पूर्व स्वीकृति प्राप्त करे। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रक्रिया का परामर्श दिया जाता है :–

1. हर देश में राष्ट्रीय ट्रस्ट, समिति या समन्वयक 'छिन्दवाड़ा परियोजना' के लिए नया बैंक खाता खोलें।
2. सहजयोगियों और योगिनियों को राष्ट्रीय ट्रस्ट, समिति या समन्वयक के पास योगदान भेजने के लिए आमन्त्रित करें।
3. योगदान के लिए आई सभी राशियों की रसीद दें और इस राशि को कथित बैंक खाते में जमा कराएं।
4. आवश्यक समय के पश्चात् राष्ट्रीय ट्रस्ट, समिति या समन्वयक भारतीय राष्ट्रीय ट्रस्ट के कार्य–कारी सचिव को भारत भेजी जाने वाली इस राशि के बारे

में सूचित करें।

5. कार्यकारी सचिव, तत्पश्चात , इस प्रस्तावित राशि को भारत भेजे जाने के विषय में भारत सरकार से आवश्यक स्वीकृति लेंगे, और इसके विषय में सम्बन्धित राष्ट्रीय ट्रस्ट / समिति / समन्वयक को सूचित करेंगे।

6. इसके बाद प्रस्तावित राशि निम्नलिखित बैंक खाते में भेजी जाएगी :–

Name of the Bank Account	-	H.H. Shri Mataji Nirmala Devi Sahaja Yoga Trust Chhindwara Account
Name of the Bank	-	UTI Bank
Branch	-	K-12 Green Park Main, New Delhi 110016, India
Account Number	-	015010100265263

योगदान देने वाले लोगों की सूची भी, योगदान में दी गई राशियों सहित, भारतीय राष्ट्रीय ट्रस्ट के कार्यकारी सचिव को भेजी जानी चाहिए। छिन्दवाड़ा मन्दिर में इस पावन परियोजना के लिए प्राप्त हुई सभी धन राशियों का स्थायी लेखा रखे जाने का प्रस्ताव है।

जय श्री माताजी

हस्ताक्षर

राजीव कुमार

कार्यकारी सचिव

परम पूज्य श्री माताजी का 59 वाँ विवाह वर्षगाँठ समारोह

आस्ट्रेलिया (7.4.2006)

(सहज समाचार)

प्रिय सहजी भाई–बहनों,

7 अप्रैल शुक्रवार के दिन श्रीमाताजी और सर सी.पी ने अपने विवाह की 59 वीं वर्षगाँठ मनाई। इस मंगलमय अवसर का कीर्तिगान करने के लिए विश्व सहज सामूहिकता से श्रीमाताजी और सर सी. पी को असंख्य ई–मेल प्राप्त हुए। बधाई के इन संदेशों के लिए श्रीमाताजी ने स्वयं आशीर्वाद देते हुए पत्र लिखकर आभार प्रकट किया।

श्री माताजी के पत्र की पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं:–

" सात अप्रैल को आस्ट्रेलिया की सहज सामूहिकता ने अगाध प्रेम पूर्वक हमारे विवाह की 59 वीं वर्षगाँठ मनाई। यह अत्यन्त हृदयस्पर्शी एवं आनन्ददायी अवसर था। विश्व–भर के अपने प्रिय सहजी बच्चों से मुझे गहन प्रेम तथा मंगलकामनाओं के संदेश प्राप्त हुए। उन सभी बच्चों के प्रति मैं अपना हार्दिक प्रेम एवं आशीर्वाद व्यक्त करना चाहती हूँ। गहन आड़ोलित हृदय से सर सी.पी. भी आप सबके प्रति अपना शाश्वत गहन आभार व्यक्त करते हैं।

हस्ताक्षर

निर्मला श्री वास्तव

(श्री माताजी निर्मला देवी)

8 अप्रैल –2006

(रूपान्तरित इंटरनैट विवरण)

विलियम ब्लेक की कब्र की आश्चर्यजनक खोज

(विश्व भर के लिए उत्सव का अवसर)

श्री माताजी की कृपा से सहजयोगी विलियम ब्लेक को श्री भैरव नाथ के अवतरण के रूप में पहचानते हैं, एक महादूत (Arch Angel) के रूप में , जो निरन्तर हमारे वामपक्ष (Left side) पर कार्यरत हैं। जैसा हम जानते हैं विलियम ब्लेक का जन्म वर्ष 1757 में इंग्लैण्ड में हुआ। उन्होंने परमेश्वरी कला के चमत्कारिक ग्रन्थों का सृजन किया जो निरन्तर पूरे विश्व को आकर्षित , प्रेरित एवं परिवर्तित कर रहे हैं।

1827 में जब उन्होंने पृथ्वी से प्रस्थान किया तो विलियम ब्लेक के शरीर को मध्य लन्दन स्थित बनहिल क्षेत्र (Bun Hill Fields) नामक स्थान में दफनाया गया। वर्ष 1965 में अज्ञानता के कारण एक दुखद घटना घटी : जिसमें कब्र का स्थान दर्शाने वाले तुच्छ पत्थर को क्षेत्र के अन्य पत्थरों के साथ हटा दिया गया। लन्दन के अधिकारियों ने कब्रिस्तान के इस भाग को पार्क में परिवर्तित करने की योजना बनाई थी जिसे शीघ्र ही कार्यान्वित किया गया। इस प्रक्रिया के दौरान विलियम ब्लेक की कब्र भी खो गई। अब सुप्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्रीय ब्लेक विद्वान, लन्दन स्थित ब्लेक सोसायटी (Blake society) सहित कोई भी न जानता था कि विलियम ब्लेक की कब्र का स्थान कौन सा है!

बनहिल फील्ड में दिखाई देता स्मृति पत्थर। यथेच्छ स्थान पर लगाए गए पत्थर पर खुदा है, 'विलियम ब्लेक के अवशेष समीप ही दबे हुए हैं।'

जब लुईस और केरौल पश्चिमी लन्दन का एक सहजयोगी जोड़ा– पहली बार बनहिल फील्डज़ गए तो उन्हें विलियम ब्लेक के विषय में उतना ही ज्ञान था जितना अन्य सहजयोगियों को है। वे हैरान थे कि ब्लेक की कब्र का वास्तविक स्थान खो गया था और भुला दिया गया था और उसके स्थान पर एक पत्थर लगा हुआ था जिस पर खुदा था: 'विलियम ब्लेक के अवशेष समीप ही दबे हुए हैं।' शक्तिशाली चैतन्य लहरियों की भावना से प्रेरित इस जोड़े ने दिव्य कवि की कब्र के वास्तविक स्थान को खोजने का प्रयत्न करने का निश्चय किया तथा

सत्य को खोजने के लिए अन्वेषण एवं छान–बीन करने का एक लम्बा और विस्तृत कार्यक्रम बनाया। कब्र के सही स्थान को खोजने के लिए पुराने नक्शे तथा चार्ट उपयोग किए गए। परिणाम स्वरूप, दैवी सहायता से उन्होंने वास्तव में विलियम ब्लेक की कब्र का सही स्थान, खोज लिया। उनकी अधिकारिक खोज वर्षों के वैज्ञानिक एवं विद्वतापूर्ण शोध का परिणाम थी, जिसे उन्होंने तभी से शुरु कर दिया था जब वे पहली बार वहाँ गए थे। उनके शोध परिणामों के लिए लन्दन के अधिकारियों, ब्लेक सोसायटी तथा ब्लेक पर शोध करने वाले विद्वानों ने अपना आभार प्रकट किया है। कुछ लोगों ने तो उन्हें निमंत्रित करके उनके सम्मुख कृतज्ञता व्यक्त की है। वे विद्वान ये न जानते थे कि इस जोड़े की वैज्ञानिक खोज ने वास्तव में उसी खोज की पुष्टि की थी जो (लुईस–केरौल) वो पहले ही कर चुके थे। पहली बार जब ये लोग वहाँ गए थे तो कुछ ही मिनटों में चैतन्य उन्हें सीधा उस स्थान पर ले गया जहाँ से गुलाब की तीव्र सुगन्ध आ रही थी।

विलियम ब्लेक की कब्र का सही स्थान जिसे सहज–योगियों ने वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित किया है।

कब्रिस्तान के कार्य में रत लन्दन अधिकारियों ने इस सहजयोगी जोड़े को सरकारी वार्ताओं की एक शृंखला में भाग लेने के लिए निमन्त्रित किया। इस दौरान लन्दन के पचास सहजयोगियों ने विलियम ब्लेक को दिए गए महत्व को दर्शाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। परिणाम स्वरूप विलियम ब्लेक की कब्र के सही स्थान पर एक उपयुक्त स्मारक बनाना भी सरकारी कार्य–सूची में है।

वार्ता ज्यों–ज्यों आगे बढ़ी, अधिकारियों ने लुईस और केरौल को एक स्वतंत्र संस्था बनाने की राय दी ताकि वे विलियम ब्लेक की कब्र पर उपयुक्त स्मारक बनाने के लिए सहायता प्राप्त कर सकें। इस प्रकार यू. के. कमेटी के प्रोत्साहन से "The Friends of William Blake Group" (विलियम ब्लेक मित्र समूह) की स्थापना की गई ताकि इस महत्वपूर्ण कार्य को आगे बढ़ाया जा सके।

बनहिल फील्ड से सम्बन्धित निर्णय लेने के लिए अगली महत्वपूर्ण सरकारी वार्ता जून 2006 में निश्चित की गई है। यू.के. के सहजयोगी एक वैबसाइट बना रहे हैं जिसके माध्यम से विश्व भर के 'सहजयोगी विलियम ब्लेक मित्र समूह' के सदस्य बन सकेंगे। इस स्मारक को बनाने में सहायक होंगे। वैबसाइट के तैयार होते ही F.W. B. G उन सभी सहजयोगियों से अपील करेगी जो इस दिव्य व्यक्ति के महत्व को समझते हैं। श्रीमाताजी की कृपा से विलियम ब्लेक के प्रति अपने अगाध प्रेम एवं श्रद्धा का प्रदर्शन करने के लिए यह सुनहरा अवसर है। प्रभावशाली स्मारक बनाकर हम इस कार्य को कर सकते हैं। F.W.B.G लन्दन आधिकारियों के सम्मुख इस कार्य के लिए सामूहिक प्रार्थना पत्र पेश करेगी।

विलियम ब्लेक कब्र की खोज के विषय में अधिक जानकारी के लिए Luis and Carol Garrido को लिखें : luisgarrido 108 @ hotmail.com

जय श्री माताजी

(इन्टरनैट विवरण)

रूपान्तरित

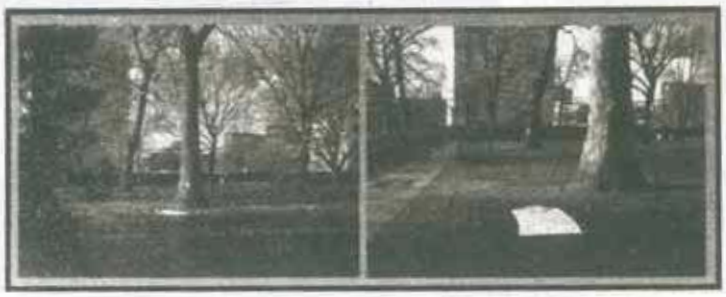

विलियम ब्लेक की कब्र

विलियम ब्लेक का जन्मदिवस समारोह

हैमरस्मिथ टाऊन हाल, लन्दन – 28.11.1985

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का सार्वजनिक प्रवचन

विलियम ब्लेक जैसे महान कवि और पैगम्बर को श्रद्धान्जलि अर्पित करना हम सबके लिए बहुत बड़ा सम्मान है। पहली बार जब मैं इंग्लैण्ड आई तो मुझे बताया गया कि इंग्लैण्ड विद्या का केन्द्र है। यहाँ पर आप बहुत से संग्रहालय और प्रदर्शनियाँ देख सकते हैं। अचानक एक दिन मैंने सहजयोगियों से कहा कि मैं विलियम ब्लेक की तस्वीरों की टेट चित्रशाला (Tate Gallery) देखना चाहूंगी। सभी हैरान थे क्योंकि मैं कभी इन स्थानों पर, विशेष रूप से पुस्तकालयों में और पुस्तकों के लिए नहीं जाती। वहाँ जाकर जब मैंने इस महान कवि, महान व्यक्तित्व को देखा तो इंग्लैण्ड के लोगों के लिए उनके हृदय से परमेश्वरी बोध एवं सूझ–बूझ के साथ अत्यन्त प्रेम और ईमानदारी फूट पड़ रही थी ताकि वहाँ के लोग दिव्यत्व की महान शक्ति को समझ सकें। पर जब मैंने कुछ अटपटे लोगों को देखा जो अपने साथ आवर्धन लैंस (magnifying glasses) लाए हुए थे जिनसे वे उन चित्रों को देख रहे थे और इन शीशों की सहायता से तस्वीरों में लोगों के गुप्तांगों को देख रहे थे, तो मेरे आश्चर्य की कोई सीमा न रही! मैंने कहा , इन जाहिल, पूर्णतः नीच लोगों को देखो, इन्हें उनके चित्रों में कुछ भी उत्कृष्ट , कुछ भी उत्तम नहीं दिखाई पड़ता। और वे उनके फोटो खींच रहे थे! लोगों की प्रतिक्रिया को देखकर मैं आश्चर्यचकित थी! तब मैंने महसूस किया कि अपने जीवन में ऐसे लोगों के साथ रहकर, जिन्हें दिव्यता का बिल्कुल भी विवेक नहीं है, वे कितने दुखी हुए होंगे! वे एकान्त में जा–जाकर रोए होंगे, वे अवश्य रोए होंगे, किसी ने उन्हें स्वीकार नहीं किया होगा। यह असम्भव है। इतने निम्नमस्तिष्क किसी ऐसी चीज़ को स्वीकार नहीं कर सकते जो इतनी उत्कृष्ट हो, इतनी महान हो। और मेरा हृदय दर्द से कराह उठा। हे परमात्मा! स्वयं को तड़पाने के लिए, कोई ऐसी चीज़ कहकर, जिसे लोग समझ ही नहीं सकते, स्वयं को कष्ट देने के लिए उन्होंने इस स्थान पर जन्म ही क्यों लिया ? परन्तु बात ऐसी नहीं है। मैंने जाना कि वे कौन थे, क्या कर रहे थे, और वे यहाँ पर क्यों आए। उनके विषय में हमारा ज्ञान बहुत सीमित है क्योंकि पुस्तकों से आप ये नहीं समझ सकते कि वो क्या चीज़ थे!

वे भैवरनाथ के अवतरण थे जिन्हें हम सेन्ट माइकल, या सैंट–जार्ज भी कहते है– इंग्लैण्ड के सन्त देव–दूत। इसीलिए उन्हें अवतार लेना पड़ा और क्षमा करनी पड़ी। उनकी यही भूमिका थी– परमात्मा के विषय में निर्भीकता पूर्वक खुल्लमखुल्ला बात करना। उन्हें प्रतीकात्मक भाषा का उपयोग करना पड़ा। इसके लिए वे विवश थे। आप यदि आत्म साक्षात्कारी व्यक्ति हैं तो उन्हें समझना बिल्कुल भी कठिन नहीं है। कभी हँसते हुए, कभी रोते हुए उस नाटक का आनन्द लेते हुए, जिसकी व्याख्या करने का उन्होंने प्रयत्न किया। आप उन्हें पढ़ेंगे, उन्हें पढ़ते हुए उनके विनोद–विवेक को देखकर मैं

आश्चर्यचकित रह जाती हूँ, किस तरह से खुल्लमखुल्ला वे टिप्पणियाँ करते हैं! मुझे लगता है कि वे भारत के मार्कण्डेय या कबीरदास की तरह से थे जिन्होंने अपनी तलवार (कलम) से पूरे समाज की काट–छाँट की। निर्भयतापूर्वक, परन्तु अत्यन्त प्रेम से, उन्होंने समाज को उप़युक्त आकार में लाने का प्रयत्न किया। उनका गीत यदि आप पढ़ें तो यह अत्यन्त कोमल है। जो भी लोग उन जैसे थे, उनकी शैली के थे, अत्यन्त खुले और सीधे, वे अत्यन्त मुखर होते हुए भी, अत्यन्त मधुर थे। ईसा–मसीह का वर्णन जिस प्रकार उन्होंने किया है, उसे उन्होंने अपनी ज्योतित दृष्टि से देखा; उन्होंने देखा कि लोगों ने ईसा का वर्णन अत्यन्त विकृत रूप में किया है। ईसा मसीह जैसे थे उसके बिल्कुल उलट। मुझे भी ऐसा ही लगा। मेरा जन्म एक प्रोटेस्टेंट ईसाई– परिवार में हुआ। इसाईयों की असलियत देखकर मुझे सदमा पहुँचा। मैंने कहा, क्या यही ईसाई हैं ? जो वे कहना चाहते हैं अत्यन्त स्पष्ट है। आप समझ सकते हैं कि व्यवहार में यदि आप कोमल हैं, मुझे खेद है, मुझे भय है, मुझे संदेह है, इसकी ओर देखें, यह प्रायः उपयोग की गई भाषा है। विलियम ब्लेक कहते हैं कि ईसा मसीह ऐसे व्यक्ति न थे। मैं भी कहती हूँ, 'मैं चुनाव नहीं लड़ रही हूँ, मैं यहाँ तुम्हें प्रसन्न करने के लिए नहीं आई हूँ मैं तो यहाँ इसलिए आई हूँ , कि आप स्वयं स्वयं को प्रसन्न करें, स्वयं का आनन्द लें। आपकी सम्पदा की अभिव्यक्ति हो और उसका आनन्द लिया जा सके। इसी प्रकार से विलियम ब्लेक ने भी ईसा–मसीह की एक झलक आपके सम्मुख रखी, कि वे इतने भद्र–पुरुष न थे जो लोगों के पास जा–जाकर व्यर्थ में भद्रता का प्रदर्शन करते, उनके प्रति बनावटी भद्रता दिखाते, कृत्रिम व्यवहार करते, परन्तु दीन–हीन लोगों के साथ उनका व्यवहार बहुत ही प्रेममय था। मछुआरों में उन्होंने दिव्यत्व का सृजन किया, उनमें सर्व–साधारण लोग थे, अनपढ़ थे और जो समाज के निम्नतम वर्ग से थे। ईसा–मसीह ने इन लोगों को चुना और इन्हें दिव्य बना दिया। ईसा मसीह कभी मन्त्रियों, प्रधानमंत्रियों राज्यपालों के पास नहीं गए। उन्होंने कभी ऐसा नहीं किया। धर्माधिकारी कहलाने वाले महान लोगों को यदि आप देखें तो आप जान पाएंगे कि ये सभी लोग राज्य पालों, राजाओं तथा रानियों के साथ ही व्यस्त होते हैं ताकि ये लोग आकर उन्हें प्रणाम करें। ऐसे लोग राजनीति प्रचालित होते हैं। मानवरचित राजकरण की दल दल में कोई दिव्य व्यक्ति कैसे फँस सकता है ? ये बात हम नहीं समझते क्योंकि हम तो हर चीज़ को तर्क संगत ठहराने का प्रयत्न करते हैं। परमात्मा का धन्यवाद है कि वे ऐसे व्यक्ति थे जो तार्किकता विरोधी थे, और ईसा मसीह को सर्वसाधारण मानव के स्तर पर घसीटने वाले सभी बौद्धिक विचारों के विरोधी थे, क्योंकि वे स्वयं दिव्य व्यक्ति थे और वे ईसा मसीह को समझ पाए।

कभी–कभी उन्हें निराशा हो जाया करती थी और उनके सम्मुख धन, अपने भाई–बहनों को समझाने की समस्या भी होती थी क्योंकि हर आदमी उन्हें परेशान करने में ही लगा रहता था। येरूशलम की बात करने के लिए ऐसी महान् आत्मा पृथ्वी पर अवतरित हुई। येरूशलम से उनका क्या अभिप्राय था ? येरूशलम क्या है? क्या है ? हम तीर्थ यात्रा के लिए येरूशलम क्यों जाते हैं ? क्योंकि वहाँ ईसा मसीह का जन्म हुआ था। इंग्लैण्ड

में जब ईसा मसीह का जन्म होगा तो इंग्लैण्ड भी येरूशलम बन जाएगा।

परन्तु आज कितने अंग्रेजों को आत्मा की चिन्ता है ? अंग्रेजी भाषा अपने आप में इतनी अटपटी है कि Spirit शब्द का उपयोग हम शराब के लिए शराब पीने के लिए, अपने आस पास घूमती हुई मृत आत्माओं के लिए और 'आत्मा' के लिए भी करते हैं। पृथ्वी पर जब उनका जन्म हुआ तो औद्योगिक क्रान्ति अभी शान्त नहीं हुई थी और लोग अभी भी , जैसा वे कहते हैं, इन मिलों में प्रवेश कर रहे थे। उन्होंने यहूदी धर्मशास्त्रज्ञों को भी देखा कि वे किस प्रकार आचरण कर रहे हैं। उन्होंने धर्म के मिथक को भी देखा। वे नहीं जानते थे कि विश्वभर के सभी धर्माधिकारी वही मूर्खताएं कर रहे हैं, केवल ईसाई मत में ही ऐसा नहीं हो रहा। किसी भी देश में जाकर वहाँ के धर्म को आप देखें तो समझ पाएंगे कि सर्वत्र मूर्खता की एक ही शैली है, ऐसी शैली जो पैगम्बरों, अवतरणों और महान सन्तों द्वारा बताई गई शैली से बिल्कुल उलट है। केवल ईसाई मत में ही यह बात नहीं है। फिर भी कोई इसे भूल नहीं पाता क्योंकि ईसाईयत का एक विशेष धर्मोत्साह है, एक विशेष भूमिका है, इसका एक विशेष अर्थ है। वे इसी से लड़ रहे हैं, और ये भी कह रहे हैं कि मोज़िज़ इस पृथ्वी पर नियमाचरण तथा नैतिकता के विषय में बताने के लिए आए। वे मिल्टन का वर्णन उस व्यक्ति के रूप में करते हैं जो कहता है कि देवता ही सभी कुछ हैं, अति–नैतिक देवता। परन्तु वे दिव्य मानवता का वर्णन करते हैं। ईसा–मसीह का वर्णन करते हुए वे कहते हैं कि मानव का उद्धार करने के लिए – उन्हें ये बताने के लिए नहीं कि ऐसा करो, ऐसा मत करो– ईसा मसीह पृथ्वी पर अवतरित हुए। मोज़िज़ के समय में ये सब ठीक था–नियमाचरण। वो इसे नैतिक ईसाई धर्म कहते हैं, अर्थात् यह अवश्य ही अनैतिक हो जाएगा क्योंकि आप यदि किसी को किसी कार्य के लिए विवश करें और इस आधुनिक काल में मानव के लिए ऐसे नियम बन्धन बनाएं तो लोगों का उन पर चल पाना सम्भव न होगा और वे किसी अन्य जाल में फँस जाएंगे। जो लोग आत्मसाक्षात्कारी नहीं हैं उन पर यदि कड़े नियम थोपे जाएं तो वे उन्हें कुछ अन्य समस्याओं में धकेल सकते हैं। वे अपराधी बन सकते हैं, प्रतिक्रिया स्वरूप हिंसक हो सकते हैं। उनकी गतिविधियों की प्रतिक्रिया तथा पूरी चीज़ के पाखण्ड का पर्दाफ़ाश होते हुए हम देख सकते हैं। जैसे भारत या कहीं अन्यत्र धर्माधिकारी कहेंगे, 'पैसे से लिप्त मत होओ, चर्च, मन्दिर, मस्जिद तथा अन्य लोगों को पैसा दो ताकि वे इसका आनन्द ले सकें। परमात्मा के नाम पर उस समय के लोग जैसा जीवन व्यतीत कर रहे थे वह किसी के लिए भी आदर्श न था और यही कारण है कि विलियम ब्लेक जैसे कवियों ने बार–बार जन्म लिया, लेबनान में खलील जिब्रान जैसा कवि अवतरित हुआ और भारत में तो बहुत से ऐसे कवि हुए हैं जिन्होंने समाज के तथा बुद्धिजीवियों की इन धारणाओं की भर्त्सना की – धर्म की धारणाओं की भर्त्सना क्योंकि उसमें न तो कोई प्रमाणिकता थी, न ही सत्यनिष्ठा। आप यदि ईमानदार हैं, वास्तव में गम्भीर हैं तो आइए हम स्वयं देखें कि हमें क्या प्राप्त करना है।

तो इस प्रकार से वे एक कवि रूप में आए, एक असाधारण कवि के रूप में, जिस प्रकार से वे अपने शब्दों को छन्द–बद्ध करते हैं और जैसा

विनोद– विवेक उनमें है, जिस प्रकार शब्दों के सौन्दर्य को वे अभिव्यक्त करते हैं ,वह सब एक उत्कृष्ट कवि सम है। संस्कृत में कहा है,"सत्– न काव्य, न काव्य।" कविता सत् से परिपूर्ण है। सत् अर्थात् सार तत्व – शब्दों के माध्यम से सार तत्व का विस्फोट। यदि ऐसा हो सके तो इसका जादू कविता कहलाता है और यही आपको विलियम ब्लेक में मिलता है। वे इतने महान कवि थे। काव्य केवल तभी महान है जब यह परमात्मा (Divine) की बात करे। काव्य में यदि घटिया चीज़ों के विषय में लिखा गया हो तो यह पाठक को घटिया चीजों की ओर धकेलता है। उस दिन आस्ट्रेलिया के कवि को सुनकर मैं उसके भयानक स्नानागार संगीत पर दंग रह गई। इसे आप काव्य कैसे कह सकते हैं ? वह जीवन की घटिया चीज़ों के गीत गाता है जो आपको घटिया चीज़ों और घटिया आमोद–प्रमोद की ओर ले जाते हैं। परन्तु आप यदि उसे समझ सकें तो उसने स्पष्ट कहा है कि इन पुस्तकों का लक्ष्य क्या है। ये लोगों की जेब से पैसे निकालने के लिए हैं। अब किस प्रकार आप धन बटोरते हैं ? लोगों की दुर्बलताओं का गुणगान करके, उनके अहं को, उनके लालच को भड़काकर यह सब कार्य यदि आप कर सकते हैं तो आप बड़ी अच्छी तरह से लोगों को बेवकूफ बना सकते हैं और लोग भी बड़े प्रसन्न होते हैं और उन्हें लगता है कि, "ओह! क्या पुस्तक है!" इस देश में भी बहुत से महान लेखक हुए हैं, मैं कहूँगी कि शेक्सपीयर महान उन्नत व्यक्ति थे, परन्तु पतन का आरम्भ तो बाद में हैमिंगवे (Hemingway) जैसे व्यक्तियों के आने के बाद हुआ। मेरी समझ में नहीं आता कि किस प्रकार सोमरसेट मॉम (Somerset Maughm) के बाद अचानक ये भयानक हैमिंगवे वाले लोग बढ़ रहे हैं और किस प्रकार लोग उनकी पुस्तकों को धड़ाधड़ खरीद रहे हैं (Like Hot Cakes) ? हम अपने सभी लंगर (Moorings) अपनी सभी जड़ें खो चुके हैं।

परन्तु इस प्रकार की पुस्तकों को पढ़ने से एक चीज़ बहुत अच्छी भी हुई है। फ्रॉयड जैसे व्यक्ति को ईसा मसीह मान लेने से लोग समस्याओं में फँस गए हैं और अब उन्हें ये बात महसूस हो रही है। अब लोगों को एहसास हो रहा है कि भविष्यवाणी क्यों की गई थी। इसी लिए वे पैगम्बर थे। भविष्य में होने वाली घटनाओं के लिए उन्होंने लोगों को चेतावनी दी। परन्तु किसे चिन्ता है ? उनके साथ ऐसे व्यवहार किया गया मानो वे पागल हों! आप यदि पागलखाने जाएं तो सभी समझेंगे कि आप पागल हैं। पागल लोग किसी भी समझदार व्यक्ति को पागल ही समझते हैं। उनके विवेक की भर्त्सना की गई। लोगों ने सोचा कि उन्हें मतिभ्रम हो गया है; वे भ्रमित बुद्धि से कार्य कर रहे हैं (He is talking out of his head), क्योंकि लोगों में न तो समझने के लिए बुद्धि थी न ही वे प्रबुद्ध थे और न ही उनमें ज्ञान था। यही कारण है कि उन्होंने उनसे ऐसा व्यवहार किया। अब जब उनकी मृत्यु हो चुकी है तो लोग उनकी पुस्तकें बेच कर पैसा बना रहे हैं और उनके द्वारा बनाई हुई चित्रकारियाँ बेच रहे हैं, परन्तु जीतेजी किसी ने उनकी चिन्ता नहीं की। और अब तो वो जैसे चाहे उनका उपयोग करें। इस संदर्भ में मैं यहाँ बहुत से अटपटे लोगों से मिली। ये कहने में उन्होंने ब्लेक में बहुत दिलचस्पी दिखाई कि उनके अनुसार वस्त्रहीन महिला ही सर्वोत्तम है। मैंने कहा, कहाँ उन्होंने ऐसा कहा ? किस प्रकार वे

ऐसी बात कर सकते थे, वे तो अबोध थे ? अब पश्चिम में तो हम ये भी नहीं जानते कि अबोधिता कहते किसे हैं! मार्कण्डेय की तरह से अपनी माँ का वर्णन करते हुए उनके स्तनों और हर चीज़ का एक भोले बच्चे की तरह–एक भोले बच्चे को नग्न शरीर में यौन (Sex) नहीं नजर आता, वह यह नहीं देखता, और फिर भी महिला के सौन्दर्य का वर्णन करता है! इसका अर्थ ये नहीं कि महिलाएं नंगी ही घूमती फिरें। अब क्या आप लोगों की अबोधिता को बढ़ावा दे रहे हैं या उनके वाहियातपने (Baser qualities) को भड़का रहे हैं ?

हमें नैसर्गिक होना होगा। क्या आप नैसर्गिक हैं ? ये सारी विकृतियाँ और परिवर्तन इसलिए आए हैं क्योंकि मनुष्य के पास सहज मस्तिष्क नहीं है, वह कुटिल हो गया है। मस्तिष्क से इस कुटिलता को जाना होगा। ये आवश्यक है, परन्तु यदि मैं कहूँ कि मैं यहाँ अपना कार्य नहीं कर रही तो मैं निश्चित रूप से जानती हूँ कि यह कार्यान्वित नहीं होगा। इसीलिए ईसामसीह ने कहा था , "क्षमा कर दो, उन्हें क्षमा कर दो" नहीं तो परमात्मा किस प्रकार मनुष्यों से मिल सकते ? इस कुटिलता, सभी प्रकार की चालाकी से परिपूर्ण मनुष्य से बिना क्षमा किए परमात्मा किस प्रकार मिल पाते ? मोज़िज़ की बात को यदि वे सुनते तो मानव तक न पहुँच सकते, क्या वे ऐसा कर सकते ? नहीं कर सकते। उन्हें यदि मानव तक आना है तो उन्हें क्षमा करना होगा। यही कारण है कि सहज–योग में आरम्भ में ही आपको सभी को क्षमा करना होता है, आप स्वयं को भी क्षमा करते हैं, स्वयं को दोषी नहीं मानते। अब ईसाई धर्म में इससे बिल्कुल उलट किया गया है। कहते हैं कि इसका सामना करो, स्वयं समझो कि आपने जाकर पादरी के सम्मुख अपना दोष स्वीकार करना है। और आपकी स्वीकृति से पादरी भी पगला जाता है, आप तो पहले से पगलाए हुए होते ही हैं। करुणा के सागर में अपना दोष स्वीकार करने के लिए क्या है ? सागर में स्वतः ही इसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है। ईसा–मसीह ने हमे क्या संदेश दिया था ? अन्य लोगों को तथा स्वयं को क्षमा करना हमारे हाथ में बहुत बड़ा हथियार है क्योंकि परमात्मा भी हमें क्षमा करते हैं। यही सन्देश हमने समझना है कि हमें स्वयं को क्षमा करना है। परन्तु इसकी अपेक्षा जो भी गलती हम करते हैं या आत्माविरोधी कार्य करने का कोई भी प्रयत्न हम करते हैं तो हम स्वयं को दोषी मानते हैं। यदि उपदेश ऐसे हैं कि हर समय दोष भाव ग्रस्त रहो तो हम हर समय स्वयं को दोषी मानते हैं और हमारा यह चक्र (बाई विशुद्धि) पकड़ जाता है। यह चक्र पश्चिम में तो इतना अधिक पकड़ता है कि जहाँ भी मैं जाती हूँ, उनसे कहती हूँ कि सर्वप्रथम तुम्हें एक मन्त्र कहना होगा, "श्री माताजी मैं निर्दोष हूँ।" इस दोष भाव को अपने अन्दर से निकाल फेंकें। परमात्मा जब आपसे प्रेम करते हैं तो आप स्वयं को दोषी ठहराने वाले कौन होते हैं ? उन्होंने आपको उत्क्रान्ति का प्रतीक बनाया है, आप सर्वोच्च बिन्दु पर हैं, क्यों आप अपने विषय में निर्णय करके स्वयं को दोषी मानें ? क्या परमात्मा आपको क्षमा करने में सक्षम नहीं है ? क्या उनके प्रेम के सागर पर आपको विश्वास नहीं है ? परन्तु यह धारणा ईसा–मसीह के नाम पर की जाने वाली गलतियों का मूल है।

अब मैं यह बात पादरियों को बता रही हूँ , यहाँ पादरी कौन हैं, जो धर्मविज्ञान विश्वविद्यालय

(Theological college)से आया हो ? क्या धर्म–विज्ञान विश्वविद्यालय से आप परमात्मा के बारे में कुछ सीख सकते हैं, क्या ईसा–मसीह धर्म विज्ञान विश्वविद्यालय गए थे? उन्हें किस प्रकार प्राप्त हुआ? किस प्रकार उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ? आत्म–साक्षात्कार द्वारा। आत्म–साक्षात्कार होना आवश्यक है। जिस प्रकार से उन्होंने सब कुछ स्पष्ट कह दिया, अपने स्वार्थों के कारण किसी को भी वे अच्छे न लगे। हर व्यक्ति का अपना ही स्वार्थ है, कोई भी सत्यनिष्ठ और ईमानदार नहीं है। धनार्जन के लिए वे दूसरों का शोषण करना चाहते हैं। परमात्मा के नाम पर आप धन नहीं बटोर सकते। ये पाप है। ऐसे लोग कभी परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते। इसी कारण ईसा मसीह ने कहा था, "आप मुझे आवाज़ें लगाओगे, ईसा, ईसा ! पर मैं तुम्हें नहीं पहचानूंगा।" ये सत्य है। अतः यदि आपको सच्चा व्यक्ति बनना है, केवल सच्चा व्यक्ति, तो स्वयं में दोष भाव न आने दें। ये न सोचें कि मैंने अपराध किया है। भारत की एक कथा है :– एक धर्म प्रचारक भारत के एक गाँव में आया। भारत के ग्रामीण लोग अत्यन्त सीधे हैं। वे अधिक चुस्त नहीं हैं। जब वह धर्मप्रचारक जाने लगा तो लोगों ने उसकी बहुत प्रशंसा की और कहा , "श्रीमन, हम आपके आभारी हैं कि आपने हमें बताया कि पाप क्या है और ये भी कि हम सब पापी हैं।" इससे पूर्व वे ये न जानते थे कि वे पाप कर रहे हैं। यही चीज़ विलियम ब्लेक ने भी हमारे सम्मुख स्पष्ट की, ये दर्शाने के लिए, कि ईसा मसीह वे व्यक्ति थे जो मोज़िज़ के धर्मादेशों के ऊपर एक नया संदेश लाए। यहूदियों को सुधारने के लिए, निःसन्देह, उस समय मोज़िज़ की आवश्यकता थी। उस समय उन्हें धर्मादेशों की आवश्यकता थी और वे शरीअत के नियम लेकर आए। शरीअत मोज़िज़ ने आरम्भ की परन्तु मुसलमान इसका अनुसरण कर रहे हैं।

अब आज जब हम बीसवीं सदी में यहाँ बैठे हैं, तो हमें देखना चाहिए कि इस महान व्यक्ति विलियम ब्लेक की भविष्यवाणी क्या हैं। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि उनका जन्म भी इसी माह में हुआ! गुरुनानक का जन्म इसी माह में हुआ, मोहम्मद साहब भी इसी माह में अवतरित हुए, ये सभी महान अवतरण इसी माह में जन्में। इसी माह में हमने दिवाली भी मनाई है। ये इतना महान महीना है। इस माह में जन्म लेने वाले विलियम ब्लेक को पूर्णतः समझने वाले महान बच्चे होने चाहिए। मुझे केवल एक अकेला व्यक्ति इस भूमि में विवेक के बीज़ बोता हुआ दिखाई पड़ता है, हमें तो केवल ये फसल काटनी है। उसने (विलियम ब्लेक) बीजारोपण किया और आप कह सकते हैं कि शेक्सपीयर ने इस भूमि की सिंचाई के लिए जल तैयार किया। यहाँ पर बहुत से महान कवि हुए। वर्ड्ज़वर्थ (Wordsworth) एक अन्य कवि हैं जो अत्यन्त मोहक एवं सुन्दर हैं। मेरे विचार से वर्ड्ज़वर्थ ने विलियम ब्लेक की नियति को देखकर सोचा होगा कि मानव को भूलकर प्रकृति का वर्णन करना ही बेहतर है। उन्होंने यह अवश्य सोचा होगा और स्वीकार किया होगा कि इस भूमि के लोग कभी नहीं सुधर सकते और न ही इस भूमि में कुछ बोया जा सकता है। परन्तु जो भी हो विलियम ब्लेक ने भी आपको एक नया स्वप्न, एक नई धारणा प्रदान की है, क्योंकि पश्चिम में ईसा मसीह को एक सर्वसाधारण मानव के स्तर पर खींचकर ले आए

हैं। जिस प्रकार अब लोग उनका वर्णन करते हैं, मुझे आश्चर्य होता है! उन्हें ये सब कहाँ से पता चला ? क्या उनकी आँखें हैं या अंधों की तरह से उनके विषय में बात कर रहे हैं ? और मैं बिशप और आपके आर्क बिशप को इस प्रकार बात करते हुए सुनती हूँ! क्या उन्हें परमात्मा का बिल्कुल डर नहीं है ? यदि आप ईसा मसीह के विषय में इस प्रकार बातें करते हैं तो इस देश का क्या होने वाला है। और अब आपको ऐसी तस्वीरें, ऐसी फिल्में मिलने वाली हैं जिनमें ईसा मसीह को अधर्मी व्यक्ति दर्शाया गया है, उनकी माँ को नंगा दिखाया गया है, उनके लिए कोई सम्मान नहीं है! मैं नहीं जानती कि आपने इस बात पर ध्यान दिया है कि नहीं कि विलियम ब्लेक चाहे वस्त्र–हीन मनुष्यों की तस्वीरें बनाते थे परन्तु देवताओं की नंगी तस्वीरें उन्होंने कभी नहीं बनाई। ईसामसीह की तस्वीर उन्होंने कभी नहीं बनाई। इस प्रकार से वे उनकी तस्वीरें कभी नहीं बनाते, सम्मान पूर्वक बनाते हैं। और आधुनिक युग के हम सब महान बुद्धि–जीवी परमात्मा का कोप पात्र बनने के लिए ये सब चालाकियाँ करने का प्रयत्न कर रहे हैं!

विलियम ब्लेक के बारे में दूसरी बात ये है कि वे एक मुद्रक (Printer) थे। हमें सोचना चाहिए कि वे मुद्रक क्यों बने। वो छपाई का काम क्यों करने लगे ? अपना वर्णन करते हुए उन्होंने स्वयं को वह नर्क (Hell) बताया जहाँ पुस्तकों की रचना होती है। उन्होंने बताया कि किस प्रकार हर चक्र पर हम एक राक्षस की रचना करते हैं और उन्हें पुस्तकालय में डालते हैं। यही कारण है कि मैं स्वयं भी (श्री माताजी) पुस्तकों के विरुद्ध हूँ। परन्तु वे मुद्रक क्यों बने? ये बात जाननी अत्यन्त आवश्यक है तथा उन्होंने मुद्रण के विषय में इतना कुछ क्यों लिखा ? आज की संचार–व्यवस्था (Media) को आप देखें, उन्होंने कहा कि संचार व्यवस्था बहुत बड़ा असुर है। इसी ने, मुझ पर विश्वास करें, आपको पूरी तरह बर्बाद कर दिया है। आपसे धन ऐंठने के लिए, आपकी दुर्बलताओं से खिलवाड़ करने के लिए, आपको तथा आपके बच्चों को अधिक दुर्बल बनाने के लिए, समाज को आयोजित रूप से नष्ट किया जा रहा है। वे इसी समाज व्यवस्था पर चोट करना चाहते हैं। इसी कारण से विलियम ब्लेक ने जन्म लिया और मुद्रक (Printer) बने। वो कुछ और भी बन सकते थे। इंग्लैण्ड या कही अन्यत्र कोई भी कवि मुद्रक नहीं था। केवल ब्लेक ही मुद्रक बने। कारण ये था कि वे संचार–व्यवस्था (Media) की असलियत दिखाना चाहते थे तथा इसकी जड़ों को काटना चाहते थे। परन्तु जैसा आप जानते हैं, आप चाहें या ना चाहें बुराई तो पनपती ही है, और आज की संचार व्यवस्था के विषय में तो हम समझ ही नहीं सकते कि इसने हमें , हमारी जड़ों को, हमारे विश्वास को तथा हमारे उत्कृष्ट एवं धर्मपरायण दृष्टिकोण को कितना नष्ट किया है! मैं जानती हूँ कि मुझे भी आपके दूरदर्शन और मीडिया के लोगों ने कहा कि आकर उनसे बात करूं। जिस प्रकार लोगों ने मुझे बताया कि एंग्लो– सेक्सन (Anglo-Saxon) मस्तिष्क कोई भी ऐसी बात नहीं समझ सकता जिसके लिए उससे पैसा न लिया गया हो, तो मुझे अत्यन्त आश्चर्य हुआ! परमात्मा जाने ऐसे मस्तिष्क की रचना किसने की जिसकी समझ में कोई ऐसी बात नहीं आती जिसके लिए पैसा न खर्चना पड़ा हो। मैंने कहा, पहले आप आत्मसाक्षात्कार ले लें अन्यथा

न तो मैं आपके किसी कार्यक्रम में आऊंगी न दूरदर्शन पर। ईसा–मसीह के क्रूसारोपण में भी आप उनके इसी विजय–गर्व को देख सकते हैं। उन्होंने बिल्कुल चिन्ता नहीं की।

हमारे राजनीतिज्ञों की तरह से वे भी सुबह से शाम तक एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर लोगों के पैरों पर गिर सकते थे। लिपिकों (Scribes) तथा फरीसियों (Pharisee) के पास जाकर वो भी कह सकते थे, "ओह, कृपा करके मुझे क्षमा कर दीजिए, जीवन पर्यन्त मैं आपकी सेवा करूंगा, मैं सभी कुछ बेच दूँगा।" परन्तु उन्होंने ये स्वीकार नहीं किया। गर्व, विजय गर्व के साथ वे क्रूस पर चढ़ गए। परन्तु इससे क्या पता चलता है, इससे क्या प्रकट होता है? हम मूर्खों ने उस महान व्यक्ति को सूली पर चढ़ा दिया परन्तु आज क्या हम क्रूसारोपण के विरुद्ध नहीं हैं? इसी कारण से मैं कहती हूँ कि विलियम ब्लेक एक महान पैगम्बर थे, क्योंकि उन्होंने भविष्यवाणियाँ की कि यदि आप इन घटनाओं द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलकर उच्च साधना को नहीं अपनाते तो आपका क्या हश्र होगा। अब हमें ये समझना है कि इसका सम्बन्ध हमसे है। हमारे, हमारे बच्चों, हमारे परिवार, हमारे समाज, हमारे देश के साथ भी यही घटित हो रहा है। हमें इसका सामना करना होगा और समझना होगा कि ऐसे भयंकर सुस्त हृदय, जिसे आत्मा की बिल्कुल समझ नहीं है, में परमात्मा की करुणा भी कार्य नहीं कर पाती।

सहजयोग बहुत समय पूर्व पृथ्वी पर आ गया था, मेरे आने से भी बहुत समय पूर्व, और आज यह इंग्लैण्ड में आया है। हमें कहना चाहिए कि मैं यहाँ बारह वर्ष पूर्व आई थी। विलियम ब्लेक को 'येरूशलम' लिखने में चौदह वर्ष लगे और मेरे विचार से चौदह वर्षों के बाद भी यदि वास्तव में मुझे लगे कि विलियम ब्लेक के प्रति कुछ न्याय कर पाई हूँ, इस 'येरूशलम' को जिसे वो बनाना चाहते थे, तो मैं आप सबके प्रति अत्यन्त आभारी हूँगी। परन्तु बात ऐसी नहीं है। सभी कुछ अत्यन्त निराशाजनक है। वो किसी बात को सुनना नहीं चाहते, वे केवल वही चीजें सुनना चाहते हैं जो उन्हें पसन्द हैं और इसके लिए व्यक्ति को हर समय उनकी दुर्बलताओ से खेलना पड़ता है, उन्हें बताना पड़ता है कि जो भी गलत कार्य तुम कर रहे हो वे सब बहुत अच्छे हैं, आगे बढ़ते चलो। ईसामसीह की करुणा एवं प्रेम चमत्कार कर सकते है। निःसन्देह ये कार्य कर सकते हैं क्योंकि ईसा–मसीह हमारे लिए इस पृथ्वी पर आए थे। पूरे ब्रह्माण्ड का सृजन हमारे लिए किया गया है। हम ही लोगों ने परमात्मा के आशीर्वाद प्राप्त करने हैं। हम ही ने आत्मा बनना है, जैसा उन्होंने कहा, "आपने द्विज बनना है" ("You are to be born again") परन्तु बन्धन या वातावरण तथा इतिहास के सूक्ष्म बन्धन इस प्रकार से हम पर हावी हैं कि हमें ये महसूस ही नहीं होता कि हमें आगे बढ़ना है। मुझे लगता है कि ईसा–मसीह का जीवन एक अन्य क्रूसारोपण था। मैं जब उन्हें पढ़ती हूँ तो अश्रुधारा बह निकलती है। महान पिता का कितना महान बेटा! कौन कहता है कि ईसा मसीह ने अपने माता पिता की चिन्ता नहीं की ? बारह वर्ष की आयु में वे अपने घर से भाग गए, क्या इसका अर्थ ये है कि आज के सभी बच्चे बारह वर्ष की आयु में अपने घरों से भाग खड़े हों और नशों के शिकार हो जाएँ ? उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने का यह बहुत अच्छा तरीका है–घर से भाग खड़े होना,

नशों की आदतें लगा लेना, क्योंकि बारह वर्ष की आयु में ईसा–मसीह भी अपने घर से भाग गए थे! और उन्होंने कहा कि यह मेरे पिता (Father) का कार्य business है। उन्होंने लिखा कि मुझे माता–पिता की क्या चिन्ता है ? इसका अर्थ ये नहीं है कि आप अपने माता–पिता का सम्मान ही न करें, इसका अर्थ ये है कि मैं उच्च साधना कर रहा हूँ। उच्च साधना करने के लिए मुझे दूसरी दिशा में जाना होगा। आप इस दिशा में रह चुके हैं, ये जो भी हो, आप लोगों ने अपना जीवन सन्तुलित कर लिया है। परन्तु मुझे उत्क्रान्ति प्राप्त करनी है। यही संदेश उन्होंने आपके सम्मुख प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है, अत्यन्त स्पष्ट रूप से, ये अत्यन्त स्पष्ट है, बिल्कुल साफ है। जब भी वो कहते हैं 'कि इसका मुकाबला करो' जब भी वो करुणामय इतने भद्र, इतने विनम्र होते हैं, उनका संदेश केवल यही होता है कि अपनी उत्क्रान्ति को प्राप्त करो, अपनी उच्चावस्था को प्राप्त करो, वही बन जाओ। जैसा आप जानते हैं, इंग्लैण्ड में उन्होंने हमारे लिए भूमि तैयार की। जैसा मैं आपको बहुत बार बता चुकी हूँ इंग्लैण्ड ब्रह्माण्ड का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण भाग है, मैं नहीं जानती कि कितने अंग्रेज इस सत्य को जानते हैं। ये ब्रह्माण्ड का हृदय है, छोटा होते हुए भी यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। परन्तु हृदय से हमें क्या प्राप्त होता है ? प्रजातीयता (Racialism) ? ईसा मसीह यदि यहाँ आ जाएं तो आप लोग उन्हें भी निकाल फेंकोगे, क्योंकि वे अंग्रेज नहीं थे, या आपको ये विश्वास है कि वो अंग्रेज थे। हमें मिलता क्या है ? हम अपने बच्चों से प्रेम नहीं कर सकते, उनकी हत्या कर देते हैं, उनसे दुर्व्यवहार करते हैं! आप ब्रह्माण्ड के हृदय में बैठे हुए हैं, यह ब्रह्माण्ड का हृदय है, आपने विश्व को क्या देना है ? आत्मा। आत्मा का निवास आपके हृदय में है और इसीलिए ब्लेक ने कहा था कि इंग्लैण्ड को 'येरूशलम' बनना होगा क्योंकि ये हृदय है। अर्थात् आत्मा को ब्रह्माण्ड के चित्त में आना होगा, अन्यथा कार्य नहीं होंगे। परन्तु ये कहाँ से आने वाली है ? ये आत्मा, ये कहाँ जागृत होने वाली है ? ये मनुष्यों में जागृत होने वाली है। और वे मनुष्य कहाँ है ? हृदय में। वो कहाँ रहते हैं ? जो लोग यहाँ रहते हैं वो तो पहले से ही आलसी हैं। हृदय आलसी है यह अपने अन्दर से कुछ प्रवाहित नहीं कर सकता। पहले ये बहुत अधिक प्रवाहित कर रहा था, पूरे विश्व को प्रभावित करने का प्रयत्न कर रहा था, और प्रभावित करने के बाद अब ये उदासी (Depression) की अवस्था में है। पूरे विश्व को यदि आध्यात्मिक बनाना है तो हृदय को जागृत होना होगा। क्या हम अपनी जिम्मेदारी का एहसास कर पाए ? क्या हम ये बात समझ पाए ?

आध्यात्मिक होने के नाते हमें कौन सी भूमिका निभानी होगी। अब आपको आध्यात्मिक व्यक्ति की भूमिका निभानी है, परन्तु हम ऐसा नहीं कर रहे हैं। आत्मा के सिवाए हम सभी व्यर्थ की चीज़ों में व्यस्त हैं। जैसा मैंने कहा, मैंने बारह वर्ष परिश्रम किया है और मैं सोचती हूँ कि मुझे दो वर्ष और यहाँ रुकना पड़ेगा। चौदह वर्ष, और तब हो सकता है, मैं ऐसी आशा करती हूँ, इस देश में येरूशलम बना हुआ दिखाई देने लगेगा। आप इस कार्य को कर सकते हैं। केवल आप ही लोग ये कार्य कर सकते हैं, कोई अन्य नहीं। आपको इसका अधिकार है।

किसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए परमात्मा

ने आपको यहाँ जन्म लेने के लिए चुना है। परन्तु आप तो किसी से धर्म के बारे में बात ही नहीं कर सकते! वे धर्म की बात नहीं करते। क्या धर्म ? धर्म जिसमें विश्व के सारे धर्म निहित हैं धर्म जो आन्तरिक सन्तुलन है, आपकी आन्तरिक शान्ति है, जो आपको उत्क्रान्ति प्रदान करता है। परन्तु हम इसके बारे में बात ही नहीं करते। धर्म की बात करना आपके शिष्टाचार के बाहर है। हम दुनिया के सभी शराबियों की बात कर सकते हैं, दुनिया भर के शराबखानों की बात कर सकते है परन्तु धर्म जैसी भयानक चीज़ की बात नहीं कर सकते, उस धर्म की जो हमारे अन्दर अन्तर्जात है! इसके विषय में हम अखबार में कुछ भी नहीं छाप सकते, परन्तु विलियम ब्लेक ने सभी कुगुरुओं और शैतान लोगों का वर्णन किया है। उनका वर्णन अत्यन्त सशक्त है, और आप लोग इन शैतानों से मिलते हैं और हजारों लोग इन भूतों का अनुसरण करते हैं, उन्हें धन देते हैं , स्वयं भिखारी बन जाते हैं परन्तु वे सच्चाई की ओर नहीं आना चाहते! क्यों ? ये प्रश्न मैं स्वयं से पूछती हूँ। ऐसा क्यों हो रहा है ? किसी भी अति तक जाने का कोई लाभ नहीं। यहाँ एक ऐसा व्यक्ति है जिसने आपके सम्मुख विस्तृत रूप से व्याख्या की है।

परम चैतन्य, वे कहते हैं, "और परमचैतन्य एक रिक्ति है" ("and Holy Ghost a vacuum")। आप किसी से भी पूछे,मैं हैरान थी जब एक बहुत बड़े पादरी से पूछा गया कि आप परम चैतन्य के बारे में क्या सोचते हैं ? वो कहने लगा, आह .... मैं अनीश्वरवादी (Agnostic) हूँ। अनीश्वरवादी ? तब उन्होंने उससे पूछा, "तो आप यहाँ क्या कर रहे हो ?" उसने उत्तर दिया, "जिस तरह से तुम नौकरी कर रहे हो, मैं भी नौकरी कर रहा हूँ।" वह अनीश्वरवादी है, परम–चैतन्य के विषय में कुछ नहीं जानता। परम चैतन्य (Holy Ghost) क्या है, विलियम ब्लेक ने कहा है कि इसका निवास आपके अन्दर है। तो क्यों नहीं हम पता लगाते कि इसका निवास कहाँ पर है ? इसका पता लगाने के लिए हम हर सम्भव प्रयत्न क्यों नहीं करते ? बाईबल ईसामसीह को अपने अन्दर सीमाबद्ध नहीं कर सकती। पूरा ब्रह्माण्ड भी उन्हें सीमाबद्ध नहीं कर सकता। आइए अन्यत्र कहीं जाकर पता लगाएं कि अन्य लोग इसके विषय में क्या कहते हैं। परन्तु हम तो अत्यन्त संकुचित विचारों के दुराग्रही महान, लोग हैं जो पूर्ण अकर्मण्यता के साथ यहाँ बैठे हुए हैं। हमारे पास समय नहीं है। हम ये भी नहीं सोचते कि इस कार्य के लिए कोई अन्य अधिकारी व्यक्ति हो सकता है जिसे हम जाकर मिलें।

परम चैतन्य (Holy Ghost) क्या है, यह अत्यन्त सहज बात है। आप यदि विवेक बुद्धि, तार्किकता नहीं, का उपयोग करें तो कुण्डलिनी ही Holy Ghost है। विवेक–बुद्धि भिन्न है। आप यदि विवेक का उपयोग करें तो पाएंगे कि त्रिदेव, पावन त्रिदेव, हैं। सर्वशक्तिमान परमात्मा हैं, ठीक है, हमारे यहाँ पुत्र (Son) हैं और आदि–शक्ति (Holy Ghost) भी। कभी आपने सुना है कि माता के बिना कभी पिता को पुत्र हुआ हो ? तो यह Holy Ghost कौन है ? ये आदिशक्ति हैं। स्वतः ही आप निष्कर्ष तक पहुँच जाते हैं। परन्तु माँ का वर्णन नहीं होना चाहिए ? इसी कारण से ब्लेक ने अलबियन (Albion) की पुत्रियों के बारे में कहा है, क्योंकि वे जानते थे कि किस तथाकथित संस्कारित ढंग से महिलाओं को दबाया जाता है। संस्कृत में हम कहते हैं, "यत्र

नार्या पूज्यन्ते, तत्र रमन्ते देवता।" जहाँ महिलाओं का सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते हैं– जहाँ महिलाओं की पूजा होती है। और महिलाओं को भी पूजनीय होना होगा वेश्याएं नहीं, और अपने नंगेपन से पाशविकता भड़काने वाली वस्त्रहीन महिलाएं और वेश्यालय नहीं, परन्तु पूजनीय महिलाएं। ऐसी महिलाओं का जहाँ निवास होता है वहाँ देवता निवास करते हैं। तो महिलाओं का दमन किया जाता था, उस सीमा तक दमन किया जाता था कि कहीं भी वे महिला के देवी होने की बात तक नहीं करना चाहते थे। अतः उनके अनुसार Holy Ghost (आदि–शक्ति) अमूर्त (निराकार) हैं, फाख्ता हैं ठीक है ये फाख्ता हैं, तो क्या ? फाख्ता से हम क्या करते हैं ? फाख्ता (Dove) से आशीर्वाद लेना इतना महत्वपूर्ण क्यों है, ये बात कोई नहीं बताता! ये रहस्य है! इसी रहस्य के साथ हमें रहना होता है। हर चीज़ रहस्य है। यहाँ पर बैंको का कारोबार (Banking) भी रहस्य है, परन्तु पैसा कहाँ जाता है, ये भी रहस्य है, इसका सम्बन्ध माफिया से है, ये भी एक रहस्य है। फिर मैसोनिक लोग स्विटज़रलैण्ड बैंक की व्यवस्था करते हैं, ये भी एक रहस्य है। हर चीज़ रहस्यमय है, छुपी हुई है और बताई नहीं जाती, "ओह ये नहीं कहना है, ये तो विदेशी बैंकिंग है, क्या बात है बहुत अच्छा नाम है!" ये विदेशी बैंकिंग है, ये यह है, ये वो है और इस प्रकार हम ये सारा पाखण्ड चलाए जा रहे हैं, इन सारी असत्य धारणाओं के साथ हम चले जा रहे हैं, ओह, ठीक है, ठीक है, ये इसी का एक भाग है।" ये क्षमा नहीं है,चालाक लोगों, धूर्तों और शैतानों के लिए क्षमा का क्या महत्व है ? क्षमा की बात करते हुए हमारे अन्दर विवेक–बुद्धि होनी आवश्यक है। क्षमा उन लोगों के लिए होती है जो महसूस करते हों कि उन्होंने पाप किए हैं। विचार करने पर ही पाप का अहसास होता है.... अन्यथा नहीं। किसी कुत्ते को देखें, चीते को देखें, इन सभी को देखें। चीते को यदि गाय खानी है तो खानी है। क्या वह कोई पाप करता है ? उसे तो पाप का बोध ही नहीं है:– "मैं नहीं जानता कि पाप क्या होता है, वो कहेगा कि "मैं नहीं जानता था कि ये पाप है, इसलिए मैंने इसे खा लिया"। परन्तु पाप है क्या ? हर समय किसी की भर्त्सना करते रहना :– "आप पापी हैं, आपने ये पाप किया है, आपने वो पाप किया है!"

मानव परमात्मा के मन्दिर हैं। कितनी प्रार्थना, प्रेम, स्नेह एवं कोमलता पूर्वक उनका सृजन किया गया है! किसलिए ? भ्रम की माया से इन कमलों को निकाला गया है, किसलिए ? निन्दित होने के लिए, कुचले जाने के लिए, इस प्रकार से दुर्व्यवहार सहने के लिए, और वह भी परमात्मा के नाम पर ? कमलो का सृजन परमात्मा को अर्पित करने के लिए किया जाता है, ताकि अपनी सुगन्ध से कमल पूरे विश्व को सुरभित कर दे। वे परमात्मा की काव्यमयी प्रतिभा हैं, जैसा ब्लेक ने वर्णन किया है। परन्तु हम मानव को इस प्रकार देखते हैं कि किस प्रकार उसका शोषण करें, उसे दबाएं और प्रताड़ित करें। इसलिए वे कहते हैं कि दो तरह के लोग हैं, मानव का शोषण करने वालों को, उन्हें निगलने का प्रयत्न करने वाले लोगों को, उन्होंने भयानक नाम भी दिए हैं। ब्लेक कहते हैं , कि धर्म अब इन दोनों के बीच समझौता कराने वाली चीज़ बन गई है, जबकि अबोध, सहज, अच्छे तथा साधक लोग कष्ट उठाते हैं। ये सत्य है।

आइए अब सब मिलकर अपने आत्म–साक्षात्कार को पा लें, आत्मा बन जाएं। यह कार्य सुगमतम है क्योंकि आदिशक्ति (Holy Ghost), जो कि कुण्डलिनी हैं, आपके अन्दर हैं। उनका निवास आपकी त्रिकोणाकार अस्थि में है और उन्हें जागृत किया जा सकता है। लोग कह सकते हैं कि उन्होंने कुण्डलिनी की बात क्यों नहीं की ? उन्होंने जो कुछ भी कहा, उसे किसने सुना ? जो भी उन्होंने कहा, उसको समझने का प्रयत्न किसने किया ? आज तक भी मुझे ऐसे अधिक लोग नहीं मिले हैं जिन्होंने ब्लेक को समझा हो! जिन तथ्यों की उन्होंने अभिव्यक्ति की किसने उनके विषय में जानने की कोशिश की ? और यदि उन्होंने इससे कुछ अधिक बताया होता तो यह बिल्कुल अस्पष्ट हो जाता। वो कहते हैं, "मुझे उन मूर्खों की बिल्कुल चिन्ता नहीं है जो मेरी बातों को समझ नहीं सकते।" वे स्पष्ट कहते हैं। केवल तीन बार उन्होंने 'मूर्ख (Idiot) शब्द का उपयोग किया है और जड़मति (Stupid) तथा बेवकूफ (Fool) शब्दों का प्रयोग बहुत बार किया है। परन्तु मेरे लिए वे सब परमात्मा के बच्चे हैं। मैं जानती हूँ कि ब्लेक कितने नाराज़ थे, क्यों नाराज़ थे, और मैं उसे समझती भी हूँ। उसने सोचा कि यहाँ पर सहजयोग आने से पहले मुझे इन लोगों पर प्रहार करना चाहिए और झकझोर कर इन्हें चौंकाना चाहिए ताकि ये तैयार (सहजयोग के लिए) हो जाएं। परन्तु उनकी समीक्षा में आलोचकों ने यह लिखा है कि उन्हें इसलिए स्वीकार नहीं किया गया क्योंकि वे सीमा से बहुत परे चले गए थे। मेरे साथ भी ऐसा ही है। मुझे भी लोग स्वीकार नहीं करते क्योंकि मैं भी बहुत दूर चली जाती हूँ। मुझे चाहिए कि उनको प्रसन्न करने का प्रयास करूं। क्या मुझे तुम्हारे मतों (Votes) की आवश्यकता है जो मैं तुम्हें प्रसन्न करने का प्रयत्न करूं ? मुझे तो आपको सत्य बताना है चाहे ये आपको अच्छा लगे या न लगे। मैं चाहती हूँ कि आप इसे स्वीकार करें क्योंकि इसी कार्य के लिए मैं यहाँ पर हूँ। मैं यहाँ इसी कार्य के लिए हूँ कि आप सत्य को स्वीकार करें और इसे पा लें। अपनी सामर्थ्य अनुसार मैं पूरा प्रयत्न करूंगी। मैं आपके लिए खाना बना सकती हूँ, आपको खाना परोस सकती हूँ, आपको तोहफे दे सकती हूँ और वो सभी कार्य कर सकती हूँ जो कोई माँ अपने बच्चों के लिए कर सकती है। परन्तु माँ के प्रयत्न यदि सफल न हों तो उसे चिल्लाना पड़ता है, कभी–कभी बिल्कुल स्पष्ट कहना पड़ता है, क्योंकि आपने इसे प्राप्त करना है। लोगों पर इसे थोपा नहीं जा सकता, ये बहुत बड़ी समस्या है। आत्म–साक्षात्कार लोगों पर थोपा नहीं जा सकता। विवश करके किसी को आत्म–साक्षात्कार नहीं दिया जा सकता। मान लो रूसी लोग मुझे कहें, उनकी सहजयोग में बहुत रुचि है उसमें कोई सन्देह नहीं, परन्तु वो यदि कहें कि हमारी सरकार में आकर आप उन्हें आत्म–साक्षात्कार दो तो मैं ऐसा नहीं कर सकती। मैं ऐसा नहीं कर सकती। आपको स्वतन्त्र होना होगा! जब आप स्वतन्त्र होते हैं तो भिखारी होते हैं। देखें कि हम स्वतंत्रता का कितना मूल्य चुका रहे हैं ? कोई भी स्वतन्त्र नहीं है! यूरोप में जाकर मुझे ये सारे गहने उतारने पड़ते हैं, पारिवारिक प्रतिष्ठा के कारण जिन्हें पहनने की आशा मुझसे की जाती है। मुझे वहाँ बिना बटुए के जाना पड़ता है। अपना बटुआ मुझे यहाँ अन्दर बाँधना पड़ता है, किसी चीज़ से इसको बाँधना

पड़ता है अन्यथा लोग इसे भी छीन ले जाते हैं। कुछ भी सुरक्षित नहीं है। तो इस प्रकार की स्वतंत्रता जो हमें हिंसा और हत्या तक पहुँचाती है, जिस प्रकार हमने अपने बच्चों और बुजुर्गों की हत्या की है, जिस प्रकार हमने उन सबका अपमान किया है, वह सब स्वतन्त्रता के साथ–साथ चलता है। ये स्वतन्त्रता नहीं है। ये तो हमारे अन्दर की पाशविकता के सम्मुख पूर्ण आत्म–समर्पण कर देना है!

तो आप चाहे रूस चले जाए या यूरोप, सहजयोग कठिनाई में है। आप चाहे बाएं को जाएं या दाएं को, मेरी समझ में नहीं आता कि कहाँ सहजयोग पनप पाएगा! केवल वहाँ पर जहाँ स्वतन्त्रता का उपयोग विवेक एवं सम्मानपूर्वक किया जाता है। दूसरों की स्वतन्त्रता का यदि आप सम्मान नहीं कर सकते तो आप भी बिल्कुल स्वतन्त्र नहीं हैं, आपने स्वतन्त्रता को पहचाना ही नहीं, आपने कभी स्वतन्त्रता का आनन्द उठाया ही नहीं। अतः मानव की स्वतन्त्रता का सम्मान करना होगा, जब स्वतन्त्रता का सम्मान होगा केवल तभी आप आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर सकेंगे, और केवल तभी आप उच्च स्वतंत्रता में प्रवेश कर सकेंगे, ब्लेक वर्णित पूर्ण स्वतन्त्रता में। यहाँ साधक है, इस देश में बहुत से साधक हैं और बहुत से साधक खो भी गए हैं बहुत से खो गए हैं। नशों का सेवन करने वाले बहुत से लोगों को सहजयोग ने बचा लिया है। रातोंरात लोग इसे प्राप्त कर लेते हैं। रातोंरात कैसे ? ये तन्त्र (Mechanism) आपके अंदर है। परमात्मा ने इसकी रचना की है, आत्मा का वह प्रकाश जब आपको प्रकाशित करता है, तो यह इतना शक्तिशाली हो जाता है कि आप सभी बुराइयाँ त्याग देते हैं। परन्तु उससे पूर्व यदि मैं कहूँ कि 'ये मत लो, वो मत सेवन करो,' तो आप ऐसा नहीं कर सकते। आपमें आत्मा की शक्ति नहीं है। ईसामसीह से पूर्व आने वाले बहुत से अवतरणों ने यह नहीं समझा कि मानव आत्मसाक्षात्कारी नहीं है, उनमें आत्मा की शक्ति नहीं है। ईसामसीह ने इस बात का अहसास किया और स्पष्ट कहा, "आपको पुनर्जन्म लेना होगा " (You are to be born again)। केवल इतना ही नहीं, उन्होंने कहा, "सर्वप्रथम क्षमा करो।" उन्होंने क्षमा की बात की, ताकि लोग शान्त हो जाएं, वे संविभ्रमी (विक्षिप्त–चित्त) तथा अशान्त न हों। शान्ति और करुणा में पहले वे स्थापित हो जाएं और फिर उनकी कुण्डलिनी जागृत की जाए और उन्हें आत्म–साक्षात्कार दिया जाए। तब आपमें शक्ति होती है, आप प्रलोभनमुक्त होते हैं, ऐसा कुछ नहीं होता। क्या आप ईसा–मसीह को कोई प्रलोभन दे सकते हैं ? नहीं दे सकते। इसी प्रकार से आप भी किसी प्रलोभन के दास नहीं बनते। अपने सौन्दर्य, गरिमा, अपनी शक्ति एवं साहस से आप उन्नत होते हैं। कोई चीज़ आपने समाप्त नहीं करनी होती। यही आत्म–साक्षात्कार है।

बारह वर्ष पूर्व जब मैं आई तो लन्दन में सहजयोग आया। आप लोगों की सूचना के लिए मैं बता दूं कि मैं आप्रवासी नहीं हूँ। संयोग से मैं यहाँ आई, या मुझे कहना चाहिए कि परमात्मा के विधान से मैं यहाँ आई। 134 राष्ट्रों में से मेरे पति इस पद के लिए चुने गए, उन्हें चुना गया (Elected)। उनके चुने जाने के कारण, नियुक्त होने के कारण नहीं, चुने जाने के कारण, लगातार चार बार निर्विरोध चुने जाने के कारण हम यहाँ आए। वे प्रवर (Senior) हैं, प्रवरतम मुख्य सचिव अतः हमें यहाँ आना पड़ा,

और इस प्रकार मैं यहाँ आई। अन्यथा सहजयोग सिखाने के लिए मैं इंग्लैण्ड में कभी न आई होती। ब्लेक के साथ, व्यक्ति विवश हो जाता है कि वह येरूशलम स्थापित करने का प्रयत्न करता रहे, करता रहे, करता रहे। चाहे जो हो, चाहे जो निराशा हो, चाहे जो कुण्ठा हो, कोई बात नहीं। ये कार्य करना ही है। इंग्लैण्ड की मिट्टी पर उनकी इतनी श्रद्धा थी कि हमें यहाँ येरूशलम बनाना है, परन्तु इससे पूर्व यहाँ उपस्थित आप सबको आत्म–साक्षात्कार लेना होगा और अपने आत्म–साक्षात्कार के सम्मुख विनम्र होना होगा। इसके सम्मुख आपको उद्दण्ड नहीं होना होगा। उसने कहा कि ईसा–मसीह मनुष्यों के प्रति विनम्र न थे, परन्तु परमात्मा के सम्मुख, अपने पिता (Father) के प्रति वे विनम्र थे। इसी प्रकार से आपको भी अपनी आत्मा के और आत्मसाक्षात्कार के प्रति विनम्र होना होगा तथा उच्च अवस्था प्राप्त करनी होगी। आश्चर्य की बात है कि भारत में यह ज्ञान हमेशा से था। परन्तु आशा की जाती थी कि हम मूर्तिपूजक (Heathens) बने रहें, दास बने रहें। इसके विषय में कोई कुछ भी न जानना चाहता था। जड़ों का (मूल) ज्ञान उपलब्ध था, परन्तु हमारे बुद्धिजीवियों ने इसकी बिल्कुल चिन्ता न की और हमेशा ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज की परंपराओं का अनुसरण करते रहे। इस आर्क्साब्रिज परम्परा के कारण हमने लोगों के बीच जाकर अपने देश के इस महान ज्ञान के विषय में कभी कुछ नहीं बताया और सभी कुछ निष्क्रिय हो गया। ये ज्ञान केवल भारत के लिए ही नहीं है, किसी स्थान–विशेष के लिए नहीं है, ये पूरे विश्व के लिए है, वैसे ही जैसे आपका विज्ञान का ज्ञान। वृक्ष का पूरा ज्ञान, जो आपने हमें दिया है या सभी पूर्वी देशों को दिया है, वह सम्पूर्ण विश्व के लिए है। सभी लोग इसे स्वीकार करते हैं। जो ज्ञान आपके हित के लिए है उस ज्ञान को स्वीकार करने में क्या हानि है ? क्योंकि यह पूर्व से आया है, इसलिए आप इसे इतना असुरक्षित मानते हैं!

ईसा–मसीह कहाँ से आए ? वे अमेरिका से आए थे। मैं सोचती हूँ कि वे दौड़ गए होते! उसके बावजूद भी में कहूंगी कि इन सब में से बर्तानिया के लोग सबसे अधिक परिपक्व हैं। परन्तु हम अमेरिका के, फ्रांस के लोगों के पीछे भागते हैं, ये जाने बिना कि हम क्या हैं, हम सबके पीछे दौड़ते हैं। हम विवेक हैं, हम वो लोग हैं जो ब्रह्माण्ड के हृदय का प्रतिनिधित्व करते हैं और उनके समय से लेकर अब तक के काल में हम अब परिपक्व हो गए हैं। मुझे आशा है कि शुरुआत (Breakthrough) की आवश्यकता को समझने के लिए हम काफी परिपक्व हो चुके हैं। जब इन्होंने मेरे इश्तहार छपवाए तो हुआ यह कि उनमें मेरे चेहरे का रंग काफी काला आया। मैंने कहा, कि इन इश्तहारों को भूल जाओ क्योंकि इतना काला चेहरा यदि आप लोगों को दिखाओगे तो कोई भी कार्यक्रम में न आएगा ,वो कहेंगे, "अफ्रीका का कोई व्यक्ति हमें ये सिखाने का प्रयत्न कर रहा है कि येरूशलम क्या है।" तो ये दर्शाने के लिए, कि मैं काले रंग की नहीं हूँ , उन्हें ये इश्तहार दोबारा छपवाने पड़े। चमड़ी के रंग से क्या फर्क पड़ता है ? रंग और सौन्दर्य तो हृदय से आता है। हृदय का उल्लास आपके अस्तित्व के सौन्दर्य की अभिव्यक्ति करता है। और सत्य का सौन्दर्य ये है कि ये गतिशील होता है, कार्य करता है, सज्जा मात्र नहीं है। यह

लोगों को लुभाने के तरीके अपनाने का प्रयत्न नहीं करता, ये कार्य करता है। चाहे आपको अच्छा लगे या न लगे, ये कार्य करता है। आइए हम इसे कार्यान्वित करें, ये बहुत सहज है। बुद्धिवादी करतब और अपने मस्तिष्क के माध्यम से सीमित को समझने की दिशा में जाने की अपेक्षा आइए, हम असीम की ओर चलें। यह तभी सम्भव होगा जब हम अपनी आत्मा को प्राप्त कर लेंगे– आत्मा जो असीम है, अनन्त है, जो आपके अन्दर सामूहिक चेतना का सृजन करती है, मैं कहती हूँ , सृजन करती है, इसका अर्थ है ज्ञान। परन्तु ज्ञान का अभिप्राय वो बिल्कुल नहीं है जो आप मस्तिष्क के माध्यम से जानते हैं, ज्ञान का अर्थ है– मध्य नाड़ी तन्त्र द्वारा जाना गया ज्ञान, जिसे आप महसूस करते हैं और जिसके माध्यम से अन्य सभी के चक्रों को आप अपने अंगुलियों के सिरों पर महसूस कर सकते हैं। मोहम्मद साहब ने कहा है, "कयामा (Resurrection) के समय आपके हाथ बोलेंगे "परन्तु मुसलमानों को देखें, वे कभी पुनर्जन्म (Resurrection) की बात ही नहीं करते जबकि कुरान का अधिकांश भाग पुनर्जन्म के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। वे प्रलय–दिवस की बात करते हैं क्योंकि लोगों को डराकर उनसे पैसा ऐंठना होता है:– " प्रलय–दिवस से सावधान ! आप हमें धन दें हम आपकी रक्षा करेंगे, आपको प्रमाणपत्र देंगे और प्रलय के दिन उस प्रमाणपत्र को लेकर खड़े हो जाएं तो आपकी रक्षा हो जाएगी।" तो सर्वप्रथम वे प्रलय दिवस पर पहुँच जाते हैं! ऐसा सभी धर्मों में है। लोगों ने धर्म को अत्यन्त घटिया चीज़ों के लिए, धनार्जन के लिए और राजनीतिक धारणाओं की रचना करने के लिए किया है। मैं नहीं समझ पाती कि रत्न इस प्रकार कूड़े में कैसे फेंके जा सकते हैं, ताकि कूड़ा उन्हें ढक ले और उनकी सुगन्ध दुर्गन्ध में परिवर्तित हो जाए। ये मेरी समझ से परे है। मानव की शक्तियाँ कभी कभी परमात्मा की शक्तियों पर हावी हो जाती हैं। आप देख सकते हैं कि किस प्रकार वे मूर्तियों को परिवर्तित कर सकते हैं, सौन्दर्य को परिवर्तित कर सकते हैं, वह सभी कुछ परिवर्तित कर सकते हैं जो सत्य है और उसे विवेकहीन तथा मूर्खतापूर्ण बना सकते हैं और इसी के साथ वे जिए चले जाते हैं। असलियत को वो नहीं जानना चाहते, उसी का आनन्द लेते हैं। " हम अत्यन्त प्रसन्न लोग हैं, क्या बुराई है ?" इस सृष्टि का कितना दुरुपयोग है! कितनी आकांक्षाओं तथा स्वप्नों को लेकर पृथ्वी पर मानव का सृजन किया गया था ? उन्हें समझाने के लिए, इन आकांक्षाओं के प्रति जागरूक करने के लिए और ये बताने के लिए कि वे परमात्मा का दिव्यस्वप्न हैं, क्या किया जाए ? कभी–कभी तो मैं भी पृथ्वी पर अवतरित इन कवियों के हृदय के दुख में भागीदारी करने के लिए अकेले में आँसू बहाती हूँ , उन सभी कवियों के लिए जो पृथ्वी पर आकर दुख सहते रहे, सहते रहे, सहते रहे! मुझे आशा है कि आज इस वेदना के साथ जो भी मैं आपको बता रही हूँ , आप ये देखने का प्रयत्न करेंगे कि **सत्य–निष्ठा ही स्वयं को समझने का एकमात्र मार्ग है। कोई पुस्तक, कुछ अन्य , कोई बन्धन, कोई त्याग आपको विश्वस्त नहीं कर सकता, केवल आपके अन्तःस्थित आत्मा को जानने की सत्यनिष्ठा ही इस कार्य को कर सकती है और इसी सत्य–निष्ठा को मैं 'शुद्ध–इच्छा' नाम देती हूँ** आपमें यदि वह शुद्ध इच्छा है, जो आपकी कुण्डलिनी की शक्ति है, तो

अब, अभी, आपको आत्म–साक्षात्कार मिल जाएगा, मिल जाना चाहिए। इसी आवश्यकता है, आत्मा बनने की शुद्ध इच्छा की, उससे अधिक कुछ भी नहीं। परन्तु जब ये जागृत हो जाती है तो इसकी देखभाल आवश्यक होती है ऐसा करना बहुत आवश्यक है। इसकी देखभाल करनी होगी, इस दीप को जलते रखना होगा, इसे व्यवस्थित करके एक बिन्दु पर रखना होगा ताकि आप निरन्तर उन्नत होते चले जाएं।

अभी आपको सहजयोग के विषय में सभी कुछ बता देना मैं अनावश्यक समझती हूँ क्योंकि इसे सहन कर पाना आपके लिए बहुत कठिन होगा। ब्लेक ने जिस प्रकार हमारे लिए कार्य किया, अन्य बहुत से कवियों ने भी इस कार्य को किया, परन्तु हमें समाप्त करने के लिए, मीडिया को प्रसन्न करने के लिए , धनार्जन के लिए, हमें मूर्ख बनाने के लिए, चिकने–चुपड़े शब्दों और वाक्यों का प्रयोग करके, सीधे हमें नर्क में ले जाने के लिए, अब ये नए महान कवि आ रहे हैं। इनसे सावधान रहें। सावधान, अपने बच्चों को उनसे बचाएं, पूरे समाज की उनसे रक्षा करें। पूरे इंग्लैण्ड की रक्षा करनी होगी क्योंकि यदि हृदय मर जाएगा तो पूरा विश्व मर जाएगा। परमात्मा आप पर कृपा करें।

कुछ प्रश्न–उत्तरों का सारः–

बारह हजार वर्ष पूर्व भारत के मार्कण्डेय, विलियम ब्लेक के रूप में अवतरित हुए। बारह हजार वर्ष पूर्व भी उन्होंने यही बात कही थी जो बारह हजार वर्ष बाद उन्होंने इंग्लैण्ड में कही, क्योंकि मैं नहीं जानती, उस समय यहाँ जंगल होंगे। उनका कहा हुआ सभी कुछ व्यर्थ हो गया है। कुण्डलिनी के विषय में ईसा–मसीह कितना कुछ बता पाए ? उन्होंने आदिशक्ति (Holy Ghost) की बात की। परन्तु उसी से क्यों चिपके रहें ? अब मैं आपको बताने के लिए आई हूँ, बेहतर होगा कि आप आत्म–साक्षात्कार ले लें। जब वो आए थे तो लोग मोज़िज़ की बात किया करते थे, जब मोज़िज़ अवतरित हुए तो लोग अब्राहम की बात करते थे। वर्तमान के विषय में क्या है ? मैं आपके साथ हूँ। क्यों नहीं आत्म–साक्षात्कार ले लेते ? सभी धर्म इसीलिए बनाए गए थे कि आप आत्म–साक्षात्कार पा लें, आपको सन्तुलन प्रदान करने के लिए, आपको वह सम्पदा प्रदान करने के लिए जिसके माध्यम से आप उत्क्रान्ति पा सकें। आपके पास यदि हवाई जहाज़ हो तो उसे आप पहले साधते हैं। इसी प्रकार से उन्होंने भी आपको साधना चाहा। परन्तु धर्म भ्रमित हो गए, इस प्रकार से उन्होंने चीज़ों को तोड़ा मरोड़ा कि लोग धूर्त बन गए। गलत स्थानों पर गलत कील ठोके गए, पूरे हवाईजहाज की दुर्दशा हो गई है, इससे यदि आप उड़ेंगे तो गिर जाएंगे। बेहतर होगा कि इन विचारों को त्याग दें। परन्तु कुण्डलिनी इतनी महान शक्ति है कि ये आपको सुख देती है, रोग–मुक्त करती है, आपके सभी चक्रों को ठीक करती है और शनैः शनैः ऊपर को उठती है। जब आप आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करते हैं तो वापिस जाकर यह आपकी सभी समस्याओं को देखती है .....

(28 नवंबर 1985 को हैमरस्मिथ टाऊन हॉल लन्दन में सहजयोगियों द्वारा आयोजित किए गए विलियम ब्लेक के जन्मदिवस समारोह में सहजयोग और विलियम ब्लेक की एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। (इस कार्यक्रम की सी.डी. भी बन चुकी है।)

(रूपान्तरित)

आस्ट्रेलिया में सहजयोग के 25 वर्ष

सार्वजनिक कार्यक्रम

सिडनी टाऊन हॉल सोमवार, 6 फरवरी 2006

सर सी.पी. श्रीवास्तव का सार्वजनिक भाषण

(कौन कल्पना कर सकता था कि सिडनी टाऊन हॉल में 1600 से भी अधिक साधकों को सम्बोधित करते हुए सर सी.पी. सम्मुख बैठी हुई श्रीमाताजी का उल्लेख 'देवी' शब्द से करेंगे!)

प्रतिष्ठावान, सम्माननीय अतिथिगण, देवियो एवं सज्जनों, आस्ट्रेलिया सहजयोग के राष्ट्रीय समन्वयक श्री क्रिस क्रियाकौ (Mr. Chris Kriyacaou), सहजयोग प्रचार प्रसार राष्ट्रीय परिषद के सभी सदस्यगण– देवियो एवं सज्जनों,

कुछ ऐसे क्षण होते हैं जिनमें स्वयं को अभिव्यकत कर पाना कठिन होता है और यह भी ऐसा ही क्षण है।

सर्वप्रथम मैं ो कहना चाहूँगा कि यहाँ उपस्थित आप सभी लोगों के प्रति मैं अत्यन्त–अत्यन्त आभारी हूँ। मैं जानता हूँ कि आप कितने व्यस्त हैं! इस अवसर–सहजयोग की 25 वीं वर्ष गाँठ को मनाने के लिए समय निकालना इस बात को दर्शाता है कि आध्यात्मिकता, नैतिकता और अच्छे जीवन में आपकी कितनी रुचि है। अतः पुनः मैं आपके सम्मुख नतमस्तक होता हूँ आज यहाँ आकर जो सम्मान आपने श्रीमाताजी निर्मला देवी और मुझे प्रदान किया है, उसके लिए मैं आप सबका अत्यन्त–अत्यन्त धन्यवाद करता हूँ।

मेरे विषय में बहुत सी अच्छी–अच्छी बातें कही गई हैं। ये लोग अत्यन्त करु ामय हैं। कृपा करके जो कहा गया है , उस सब पर विश्वास न कर लें। परन्तु मेरी पत्नी के विषय में जो कुछ भी कहा गया, वह पूर्णतः सत्य है, थोड़ी देर में मैं उसके बारे में बात करूंगा।

सर्वप्रथम मैं आपको बताना चाहूंगा कि आस्ट्रेलिया के सहजयोगी कितने अच्छे हैं। आप जानते हैं, केवल कुछ सप्ताह पूर्व इन्होंने हमें आमन्त्रित किया और उन्होंने (श्रीमाताजी ने) उनका

निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और लगभग छः सप्ताह के समय में सभी मिलकर एक घर को आश्रम में परिवर्तित करने के लिए जुट गए, और इन सब ने क्या कार्य किया है, इस पर विश्वास करने के लिए आपको वह स्थान देखना पडेगा! अपनी प्रिय देवी एवं माँ के लिए उन्होंने इस घर को पृथ्वी पर एक छोटे से स्वर्ग का रूप दे दिया है। वे इतने समर्पित हैं, इतने सच्चे हैं, इतने पावन हैं कि मैं उनमें से हर एक के सम्मुख नतमस्तक हूँ और यह शानदार कार्य करने के लिए, उनकी चमत्कारिक मेहमाननवाज़ी तथा उनकी गहन करुणा के लिए, मैं गहन आभार की भावनाएं व्यक्त करना चाहता हूँ।

वे सब मुझे प्रिय हैं, प्रेम से मैं उन्हें फरिश्ते कहता हूँ। वास्तव में वे फरिश्ते हैं।

देवियो और सज्जनों, मैं आस्ट्रेलिया के पूर्व प्रधानमन्त्री श्री गौ व्हिट्लम (Mr. Gough Whitlam) के प्रति अपना गहन आभार प्रकट करना चाहूंगा। उनके द्वारा स्वागत किए जाने का सम्मान मुझे प्राप्त हुआ। मैं उन्हें अपने समय का महानतम कल्पनाशील नेता मानता हूँ , आज के विश्व को उनकी अत्यन्त आवश्यकता है। हमारे यहाँ आने के विषय में उनके प्रेममय शब्दों के लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ। आस्ट्रेलिया के विपक्ष के नेता माननीय श्री किम बीज़ले (Mr. Kim Beazlay), माननीय मौरिस लेम्मा (Mr. Morris Lemma), एन. एस. डब्लयू के प्रधान, माननीय एलन कारपेन्टर (Mr. Alan Carpenter), पश्चिमी आस्ट्रेलिया के प्रमुख, सम्माननीय केट एलिस (Mr. Kate Ellis) एडिलेड, दक्षिणी आस्ट्रेलिया के सदस्य, नीतिशास्त्र संचार संस्थान की निदेशक सुश्री जुले दू वारेन्स (Ms. Jule du Varrens), N.S.W के विपक्ष के नेता श्री पीटर देबनम (Mr. Peter Debnam), और सिडनी नगर के लार्ड मेयर क्लोवर मूर (Clover Moore) , के प्रति भी मैं अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ। जिन प्रेममय शब्दों से उन्होंने हमारा स्वागत किया उनके प्रति हम अपना गहन आभार प्रकट करते हैं।

देवियो और सज्जनों, अब मैं उस बात पर आता हूँ जो मुझे आपको बतानी है। ये इतनी महत्वपूर्ण सभा है कि मैं इस अवसर को गँवा नहीं सकता था, और मैं अपने हृदय की बात कहना चाहता हूँ। परन्तु इससे पूर्व मैं ये बताना चाहता हूँ, कि यहाँ बैठी यह महिला, मेरी पत्नी, एक सन्देश, प्रेम सन्देश, भाईचारे का सन्देश देने के लिए पैंतीस वर्षों तक विश्व–भर में दौड़ती रहीं। मुझ पर विश्वास करें, उन्होंने हवाई जहाज, हैलिकॉपटर, कार, बस, बैलगाड़ी तथा पैदल यात्रा की। वे गाँवों तथा नगरों में गईं और पाँच महाद्वीपों में वे बहुत स्थानों पर गईं। ऐसा उन्होंने इसलिए किया क्योंकि उन्हें पूर्ण विश्वास था कि विश्व को एक नए संदेश की आवश्यकता है। विश्व को यदि जीवित रहना है, बने रहना है तो मानव को कुछ नया बताना होगा। और स्वयं पर पूर्ण विश्वास के साथ वर्षों तक अकेली वे चहुँ ओर गईं। शनैः शनैः सहजयोगी आए। उन्होंने क्या देखा, उनके (श्रीमाताजी) कथनों के मूल्य को, और आज 80–90 देशों में उनके अनुयायी हैं। जहाँ भी मैं जाता हूँ वहाँ सहजयोगी

हैं, सहजयोगिनियाँ हैं, उनके प्रिय बच्चे हैं। उन्होंने कितना अदभुत कार्य किया है, कितना अद्भुत सृजन उन्होंने किया है! ये क्या है ? उनका पति होने के नाते मैं इसे किस प्रकार देखता हूँ ? जो भी हो, मैं अवश्य कहूंगा कि इस कार्य को करने के लिए बहुत लम्बे–लम्बे समय तक वे मुझसे दूर रहीं, परन्तु मैं जानता था कि वो विश्व के लिए कुछ अद्भुत कार्य कर रही हैं और ये बात सत्य थी।

जैसा मैं देखता हूँ , उनका संदेश बिल्कुल सीधा सच्चा है:– विश्व के सभी पुरुष, महिलाएं और बच्चे सर्वशक्तिमान परमात्मा की रचना हैं। कुछ लोग कहते हैं, "मेरे परमात्मा सर्वशक्तिमान हैं", कुछ अन्य कहते हैं, " मेरे परमात्मा सर्वशक्तिमान हैं।" परिभाषा के अनुसार एक से अधिक 'सर्वशक्तिमान' नहीं हो सकता। क्योंकि यदि ऐसे दो होंगे तो उनमें से कोई भी सर्वशक्तिमान नहीं हो सकता। यह बात इतनी सहज है परन्तु कभी–कभी लोग इतनी सी बात को भी नहीं समझ सकते! वे कहती हैं, "पहली चीज़ ये याद रखना है कि केवल एक सर्वशक्तिमान है, और वह है परमेश्वरी प्रेम की सर्वशक्तिमान शक्ति।" और फिर वे कहती हैं, "पृथ्वी पर अवतरित सभी मानव उसी सर्वशक्तिमान की रचना हैं।" वे चाहे श्वेत हों, गेहुएं हों, नीले हों या पीले हों, वे चाहे अफ्रीका में रहते हों, आस्ट्रेलिया में, भारत में या कहीं अन्यत्र, वे सब उनके बच्चे हैं, उस सर्वशक्तिमान शक्ति के बच्चे हैं।

परन्तु यदि ऐसा है तो मिलकर शान्ति एवं प्रसन्नतापूर्वक क्यों न रहा जाए ? विभाजित क्यों महसूस करें ? स्वयं को एक–दूसरे के विरोध में क्यों माने ? ये विश्वास की बात है और उन्हें इस पर विश्वास है। वे स्वयं इसाई परिवार में जन्मीं, मेरा जन्म हिन्दू परिवार में हुआ, परन्तु हम दोनों एक ही सर्वशक्तिमान शक्ति, एक मानव परिवार में विश्वास करते हैं और इस प्रकार हम साथ हैं। इसी संदेश का उन्होंने संचार किया है, ये कहते हुए, उन्होंने इस संदेश का संचार अनगिनत श्रोताओं में किया है कि 'आप उसी सर्वशक्तिमान परमात्मा की रचना हो, आपको उन्हीं के रूप में बनाया गया है, और आपके अन्दर निहित एक शक्ति है जिसे जागृत करने में, सम्भवतः, वे सहायता कर सकती हैं। कुण्डलिनी नामक ये शक्ति जब जागृत हो जाती है तो आपका योग अपने सृजनकर्ता (परमात्मा) से हो जाता है और तब आपको नैतिकता, उच्च–चरित्र और सभी सद्गुणों से परिपूर्ण सुन्दर जीवन प्राप्त हो जाता है।' यही बात है, यही आपकी नियति है। आपमें यदि योग प्राप्त करने की इच्छा है तो आप योग प्राप्त कर सकते हैं।

देवियो और सज्जनों, अब जो बात मैं आपसे कहना चाहता हूँ वह मेरी अपनी बात है। वो ये है कि मैंने भारत के लिए असैनिक अधिकारी के रूप में कार्य किया और मुझे संयुक्त राष्ट्र में भी अन्तर्राष्ट्रीय समुद्रवर्ती संस्थान के मुख्य सचिव के रूप में कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। देवियो और सज्जनों, आप विश्वास करें कि संयुक्त राष्ट्र स्तर पर भी मैंने उनके विचारों को अपने कार्य द्वारा लागू करने का प्रयत्न किया। आप जानते हैं कि संयुक्त राष्ट्र का अर्थ है – बहुत से, बहुत से देश, भिन्न स्तर तक विकसित देश, भिन्न सक्षमताओं वाले देश,.

आदि–आदि। वो सब मिल कर कार्य करने के लिए एकत्र होते हैं। ये कोई आसान काम नहीं है। मैं समुद्रवर्ती विश्व में था, और जब मुझे मुख्य सचिव चुना गया तो किसी भी विकासशील देश का मैं पहला व्यक्ति था। मेरे सभी पूर्वाधिकारी यूरोपियन थे। लोग हैरान थे कि विकासशील देश का कोई व्यक्ति इस पद पर आए! उस समय के समुद्रवर्ती परिदृश्य पर पाश्चात्य विश्व का प्रभुत्व था और इस संस्थान को ' अमीर लोगों का क्लब' (Rich Man's club) कहा जाता था। एक मैं था : किस प्रकार मैं, बेचारा, अमीर लोगों के क्लब का मुख्य सचिव बन सकता था ? कितना बड़ा काम था!

मैंने कहा, "ठीक है, मुझे चुना गया है तो मुझे कार्य करना ही होगा, क्यों न मैं उनका (श्री माताजी) संदेश लागू करुं ? उनका (श्री माताजी) संदेश था : सभी समान हैं, एक से हैं। इसलिए मैंने निश्चय किया कि सभी सदस्य राष्ट्रों को मैं संस्थान का बराबर का सदस्य बनाऊंगा। उस समय तक सभी सदस्य समान न थे। जहाजरानी वाले अमीर देशों का बोलबाला था क्योंकि उनके पास जहाजरानी का कौशल था, बहुत से विकासशील देश अभी तक सम्मिलित ही न हुए थे और समस्या ये थी कि किस प्रकार इस संस्थान को ठीक प्रकार से विश्व संस्थान बनाया जाए। तो इस संदेश को अपने हृदय में धारण करके मैं चल पड़ा, चहुँ ओर गया। सर्वप्रथम विकसित देशों को बताया कि विकासशील देशों को इस संस्थान का सदस्य बनाने में आप ही का हित है। उन्होंने ये बात स्वीकार की। ये उनका बड़प्पन था कि वे आगे आए, विकासशील देशों की सहायता की ताकि इस संस्थान के सदस्य बनकर वे अपना समुद्रवर्ती कौशल विकसित कर सकें। शीघ्र ही वे सभी आए और आज ये सर्वोत्तम संस्थान है क्योंकि इसे विश्व के सभी सदस्य राष्ट्रों का, सभी देशों का आश्रय प्राप्त है। अब इस आधार पर मैं आपके सम्मुख एक अनुरोध करना चाहता हूँ , और वह अनुरोध इस प्रकार है :

यदि आप समाचार पत्र पढ़ते हैं, देखते हैं, समाचार सुनते हैं, तो आप जानते हैं कि ये विश्व कठिनाई में है। लोग एक दूसरे के लिए घृणा का प्रचार कर रहे हैं। विश्व में हिंसा का प्राचुर्य है। किसलिए ? क्यों ? इससे किसको लाभ होगा ? हम यदि एक ही सर्वशक्तिमान शक्ति के बच्चे हैं तो हम मिल–जुलकर क्यों नहीं रह सकते ? हमें भेदभावों की बात क्यों करनी चाहिए ? हम भी उन्हीं (श्री माताजी) की तरह से अपने समन्वय की बात क्यों नहीं कर पाते। ये कोई असम्भव स्वप्न भी नहीं है। इसे प्राप्त किया जा सकता है। परन्तु विश्व को यह संदेश मिलना आवश्यक है, उनका (श्रीमाताजी) संदेश, प्रेम का संदेश। मैं यहाँ आपसे इसलिए बात कर रहा हूँ क्योंकि मैं निष्ठा–पूर्वक अपने हृदय से विश्वास करता हूँ कि आस्ट्रेलिया में कुछ अद्वितीय चीज हैं। ये बात मैं केवल आपकी बड़ाई करने के लिए या आपकी चापलूसी करने के लिए नहीं कह रहा, नहीं। यदि मुझे इस पर विश्वास न होता तो मैं ऐसा कभी न कहता। परन्तु मैं इस पर विश्वास करता हूँ क्योंकि आस्ट्रेलिया में मैं सर्वोत्तम पाश्चात्य गुण एवं पाश्चात्य मूल्य देखता हूँ। पाश्चात्य मूल्यों

का मैं महान प्रशंसक हूँ। भारतीय होने पर मुझे गर्व है, अपनी संस्कृति पर मुझे गर्व है, परन्तु बर्तानवी लोगों का भी मैं महान प्रशंसक हूँ। वे भारत के शासक थे, ये एक अलग बात है। परन्तु जब आप यू.के. में रहने के लिए जाते हैं तो आपको लगता है कि वे मूल्यों , नैतिकता, वैधानिक शासन और शालीनता से परिपूर्ण हैं। जिन मूल्यों का मैं प्रशंसक हूँ वे सब यहाँ आस्ट्रेलिया के लोगों में मुझे मिलते हैं, परन्तु इसके अतिरिक्त भी यहाँ कुछ है, उसे चाहे आप देखें या न देखें परन्तु एक आगन्तुक के नाते मैं अवश्य उसे देखता हूँ, और वह है कुछ सीमा तक पूर्वी मान मर्यादा, विनम्रता, करुणा, शिष्टाचार, और ये सारे गुण मिलकर आस्ट्रेलिया को अद्भुत राष्ट्र बनाते हैं। यहाँ पर लोग भिन्न देशों और भिन्न नस्लों से आते हैं। और आस्ट्रेलिया के नागरिकों की तरह से मिलजुलकर प्रेम पूर्वक रहते हैं। ये उनके (श्रीमाताजी) आदर्श हैं और यही आदर्श मैं आस्ट्रेलिया के राजनैतिक जीवन में देखता हूँ। इसीलिए मैंने कहा, "यदि मुझे उनका संदेश बताने का अवसर प्राप्त हुआ है तो क्यों न मैं वह संदेश यहाँ कहूं? "

अतः आप लोगों से मेरा ये अनुरोध है : वे अपना कार्य कर चुकी हैं। पैंतीस सालों तक वे एक स्थान से दूसरे स्थान तक भागती रहीं। उन्होंने अपना कार्य पूर्ण कर दिया है, 80–90 देशों में सहज-योग का सृजन किया है तथा बहुत सी सुन्दर चीज़ों का सृजन किया है। मैं आपके सम्मुख केवल एक घटना का वर्णन करूंगा।

कुछ समय पूर्व हम लोग लन्दन में थे और एक शाम उनके लगभग 25 अनुयायी उनके आस–पास बैठकर उनसे बातें कर रहे थे, और मैं उनके साथ बैठा हुआ सभी कुछ देख रहा था। मुझे आश्चर्य होने लगा! उस सामूहिकता में (देवियो और सज्जनो आप विश्वास करें, यह परमेश्वरी सत्य है) भिन्न देशों से, जीवन के भिन्न परिवेशों से आए हुए, भिन्न रंगो के और भिन्न धर्मों के लोग थे। उनमें से एक कैथोलिक था, एक प्रोटेस्टेंट था, एक यहूदी था, एक मुसलमान था, एक सिक्ख था, कुछ हिन्दू थे, परन्तु क्या आप सोच सकते हैं, कि उन्हें याद भी था कि सहजयोग में आने से पूर्व वे क्या थे ? नहीं। वहाँ पर वे सब सहजयोगियों के रूप में, विश्व के नागरिकों के रूप में तथा श्रीमाताजी के प्रिय बच्चों के रूप में बैठे हुए थे। वे सब कुछ भूल गई थीं, कोई भेदभाव न था। सभी कुछ हृदय से था।

ऐसी घटना घटित हो चुकी है और मैं आपसे अनुरोध करना चाहता हूँ , याचना करना चाहता हूँ कि इस विश्व की सहायता करें। विश्वास करें कि ये विश्व कठिनाई में है। हर शाम क्या आप नहीं देखते कि क्या हो रहा है ? लोग हत्या करना चाहते हैं, आतंकवाद, ये वो आदि–आदि। इस सब पर विजय पानी होगी, परन्तु ताकत से नहीं। बल कार्य नहीं करेगा। कुछ विशेष दिशाओं में बल का उपयोग करना पड़ेगा, मैं ये नहीं कह रहा हूँ कि कभी भी बल का उपयोग नहीं किया जा सकता, परन्तु विश्व के लोगों को एकजुट होने के लिए उन्हें दर्शन (Philosophy) के आधार पर एक जुट होना पड़ेगा और ये दर्शन भी प्राचीन भारतीय दर्शन पर

आधारित है: एक सर्वशक्तिमान परमात्मा, एक मानव परिवार। चमड़ी के रंग, भाषाओं आदि के अन्तर के बावजूद भी सबको एकत्र होना होगा। अब यदि आप इस संदेश को स्वीकार करते हैं तो इसका प्रचार होना ही चाहिए। परन्तु यदि ये संदेश दिया ही नहीं जाता, यदि लोग इस परिणाम तक पहुँचते ही नहीं, वे यदि यही सोचते रहते हैं कि वे भिन्न हैं– A के विरुद्ध B और B के विरुद्ध C – तो समस्या को कोई अन्त है ही नहीं और विश्व में हमारे पास विनाश के इतने साधन उपलब्ध हैं कि पूरा विश्व खतरे में है। आज पूरा विश्व खतरे में है, पूरे विश्व का अस्तित्व खतरे में है। इस बात को हमने हल्के से नहीं लेना। स्थिति अत्यन्त–अत्यन्त कठिन है। परन्तु इसके बारे में एक कहावत है : आओ हम सब एक हो जाएं। और यदि आस्ट्रेलिया के आप सभी लोग मेरी बात की सच्चाई को स्वीकार करते हैं और इसे अपने जीवन का लक्ष्य बनाते हैं, जिस प्रकार से इन्होंने इसे अपने जीवन का लक्ष्य बनाया है, तो हमारी यह यात्रा सफल हो जाएगी।

मैं केवल यही बात आपको बताना चाहता था। मैं जानता हूँ कि आप सब बहुत देर से यहाँ पर हैं, मैं आपका बहुत अधिक समय नहीं लेना चाहता। मेरे विषय में जो भली–भली बातें कही गई हैं, उनके लिए में धन्यवाद देना चाहता हूँ। मैं केवल इतना कह सकता हूँ कि जो कुछ उन्होंने मुझे दिया है ये सब उसके प्रतिबिम्ब से अधिक कुछ भी नहीं। उन्होंने मेरे हृदय को परिवर्तित कर दिया है, और समाप्त करने से पूर्व मैं आपको एक कहानी सुनाना चाहूंगा कि मैं किस प्रकार परिवर्तित हुआ। मैं असैनिक अधिकारी हूँ और जब तक पूर्णतः विश्वस्त न हो जाऊं, किसी चीज़ पर विश्वास नहीं करता। पैंतीस वर्ष पूर्व जब उन्होंने कहा था: "मैं एक आन्दोलन आरम्भ करने जा रही हूँ, लोगों को परिवर्तित करने जा रही हूँ ," तो मैंने कहा "लोगों को परिवर्तित करने के लिए "और मैं हँस पड़ा! मैंने कहा, "क्या तुम्हें वास्तव में विश्वास है कि तुम लोगों को परिवर्तित कर सकती हो ?" इस प्रकार से, एक संशयालु के रूप में मेरा आरम्भ हुआ। परन्तु कुछ ऐसा घटित हुआ जिसने मुझे परिवर्तित कर दिया और यह कहानी बहुत सुन्दर है।

लन्दन में मुख्य़ सचिव के रूप में जब मेरा चुनाव हुआ तो मैंने वहाँ जाकर एक घर लिया और वो भी मेरे साथ थीं। मैंने लन्दन से बाहर एक घर लिया था और वहाँ मैं रेलगाड़ी से आया–जाया करता था। एक शाम दफ्तर से वापिस आकर मैंने घर की घण्टी दबाई, दरवाजा खुला, मैं अन्दर गया और अपने घर की बैठक या रहने का कमरा, जो भी कहें, में गया, वहाँ मैंने एक युवा पुरुष को देखा– एक युवा श्वेत पुरुष को वहाँ बैठकर समाचार पत्र पढ़ते हुए देखा। जब मैंने प्रवेश किया तो उस व्यक्ति ने मेरी ओर ऐसे देखा मानो मैं कोई घुसपैठिया हूँ! मैंने कहा, " मैं नहीं जानता कि किसी ने यहाँ आना था।" मेरे आश्चर्य का पारावार न रहा जब मैंने देखा कि वह व्यक्ति मेरा कुर्ता पायज़ामा पहने हुआ था। मैंने कहा, "मेरे मस्तिष्क को कुछ हो गया है।" मैं अपनी पत्नी के पास गया और कहा,

" जो मैं देख रहा हूँ क्या वो सच है ? एक युवा पुरुष वहाँ बैठा हुआ दिखाई दे रहा है। ये क्या है?"

वह कहने लगीं, "हाँ, हाँ, हाँ! इसमें कुछ गलत नहीं है। मैं लन्दन गई थी, पिक्काडिली सर्कस, और वहाँ मैंने देखा कि एक पुरुष बीमार, उपेक्षित पड़ा हुआ है। कार से निकलकर मैं उसके पास गई। मैंने पूछा, "क्या बात है ?" उसने उत्तर दिया, " पूर्णतः उपेक्षित, हम लन्दन में रह रहे हैं।" मैने कहा; 'क्या आप चाहते हैं कि आपकी देखभाल हो ?" उसने उत्तर दिया : "हाँ"। मैंने कहा, "ठीक है, उठो और आकर मेरी कार में बैठो, घर चलो।"

वे उसे घर लाईं और जब वह घर आया तो उसको नहलाना–धुलाना आवश्यक था। उसके पास कपड़े न थे। घर में केवल मेरे कपड़े थे। और वह व्यक्ति वहाँ पर इस प्रकार से बैठा हुआ था। इस कार्य के लिए मुझे अपनी पत्नी पर और अधिक प्रेम उमड़ा। मैंने उनकी प्रशंसा की। मैंने कहा, "तुमने बहुत अद्भुत काम किया है।" तब हम उसका सहज उपचार करने लगे। वह युवा था और हर सप्ताह वह परिवर्तित होता चला गया। वह फूल की तरह से खिल उठा। वह नशों का आदि हो गया था, उसके नशे छुट गए, शराब की आदत छुट गई, और वह एक सुन्दर फूल की तरह से खिल उठा, सुन्दर पुरुष, एक बिल्कुल नया व्यक्ति। मैंने कहा, "ऐसा यदि एक व्यक्ति के साथ हो सकता है तो सबके साथ क्यों नहीं हो सकता ?" इस घटना ने मुझे परिवर्तित कर दिया और मैं सहजयोगी बन गया। इस प्रकार ये सब घटित हुआ।

देवियो और सज्जनों, अब मैं आपका और समय नहीं लूंगा। आपका पुनः धन्यवाद करते हुए, जो समय आपने दिया है, अपना बहुमूल्य समय जो आपने हमें दिया है, उसके लिए मैं अपनी गहन शाश्वत कृतज्ञता अभिव्यक्त करते हुए समापन करुंगा। परन्तु मुझ पर विश्वास करें कि मेरा ह्रदय शाश्वत् कृतज्ञता से अभिभूत हो गया है, और यदि कृपा करके आप मेरे सन्देश की ओर ध्यान देंगे– ये मेरा सन्देश नहीं है, ये इनका (श्रीमाताजी का) सन्देश है, मैं तो इस संदेश का संवाहक मात्र हूँ– तो हो सकता है कि सहजयोग का प्रचार प्रसार करने वाले लोगों के प्रयत्न आगे बढ़ सकें तथा हो सकता है कि आस्ट्रेलिया से एक अन्य संदेश विश्व को जा पाए :–

हम सब एक ही सर्वशक्तिमान परमात्मा के बच्चे हैं, एक ही परमात्मा के। आइए मिलजुलकर एक साथ रहें, एक दूसरे से प्रेम करें, परस्पर भाई–बहन बनें। लड़ाई–झगड़े किस बात के ? क्यों न मिलजुल कर रहें ? यही एक मात्र मार्ग है जिससे विश्व प्रसन्नता पूर्वक बना रह सकता है।

देवियो और सज्जनों, आप सबका हार्दिक धन्यवाद।

इंटरनैट विवरण
(रूपान्तरित)

अन्तर्राष्ट्रीय सहजयोग शोध एवं स्वास्थ्य केन्द्र

10 वाँ वर्षगाँठ समारोह

(मुम्बई– 19.2.2006)

अन्तर्राष्ट्रीय सहजयोग, शोध एवं स्वास्थ्य केन्द्र (वाशी–अस्पताल) ने 19 फरवरी 2006 को अपनी दसवीं वर्षगाँठ मनाई। ठीक 10 वर्ष पूर्व 19 फरवरी 1996 के शुभ दिन, हमारी प्रिय माँ, परम पूज्य श्री माताजी, ने इस शोध–परियोजना का उद्घाटन करके, इसे आशीर्वादित किया और मानवता को उपहार के रूप में भेंट किया। ये स्वास्थ्य केन्द्र यद्यपि सी.बी.डी. बेलापुर नवी मुम्बई में है परन्तु विश्व भर के योगियों में यह 'वाशी–अस्पताल' के नाम से प्रसिद्ध है।

गहन–प्रेम एवं श्रद्धा पूर्वक समर्पित सहजयोगियों/सहजयोगिनियों के एक समूह ने पूरे स्वास्थ्य केन्द्र को अत्यन्त सुन्दरता पूर्वक सजाया। अपनी परम पूज्य परमेश्वरी माँ का निराकार रूप में स्वागत करने के लिए सर्वत्र भारतीय पारम्परिक रंगोलियाँ सजाई गई। स्वास्थ्य केन्द्र के सभी न्यासियों, पूर्वाधिकारियों और 300–400 योगियों को समारोह के इस शुभावसर का आनन्द उठाने के लिए आमन्त्रित किया गया। पं.डा. अरुण आप्टे, श्रीमती सुरेखा आप्टे और प. सुब्रमण्यम ने माँ कुण्डलिनी का प्रिय परमेश्वरी संगीत–गान किया। एक बहुत बड़े पर्दे पर अन्तर्राष्ट्रीय सहजयोग शोध एवं स्वास्थ्य केन्द्र को देवी–देवताओं से घिरा हुआ दिखाया गया। श्री शिव और पार्वती इसकी छत पर थे और उनके समीप श्री गणेश नृत्य कर रहे थे। श्री विष्णु केन्द्र के ऊपर गरुड़ पर उड़ते हुए दिखाए गए ..... और श्री माताजी सबसे आगे सभागार में लगी उस शिला को देखती हुई दिखाई गईं, जिस पर लिखा है ("A Gift of Love to Humanity") "मानवता को प्रेम–भेंट।"

शाम को छः बजे डा.सन्दीप राय के परिचय भाषण से कार्यक्रम आरम्भ हुआ। डा.राय ने 10 वर्ष पूर्व 1996 के उस दिन को याद किया जब परम पूज्य श्रीमाताजी ने अपने चरणकमलों से इस केन्द्र को आशीर्वादित किया था। सूक्ष्म विनोद–शीलता से परिपूर्ण उनका भाषण अत्यन्त प्रेरणात्मक था। अपने भाषण में उन्होंने इस परियोजना के पिछले दस वर्षों के सभी उतार–चढ़ावों का वर्णन किया। साक्षात् श्रीमाताजी की इच्छा थी कि मानवता को एक ऐसा केन्द्र भेंट किया जाए जहाँ लोगों को केवल सहजयोग तकनीक द्वारा रोगमुक्त किया जा सके। परन्तु जब उन्होंने स्व. प्रो. यू.सी. राय को दिल्ली से बम्बई आकर ये केन्द्र खोलने के लिए कहा तो उन्हें लगा कि बम्बई आने के लिए डा. यू.

सी. राय कुछ आना–कानी कर रहे हैं क्योंकि दिल्ली में वे भली–भांति स्थापित थे और उनके मित्रों का दायरा भी काफी बड़ा था। बाद में श्रीमाताजी ने डा.यू.सी.राय की अपेक्षा उनके बेटे संदीप राय को सलाह दी कि वे इस केन्द्र को खोलें और केवल सहज तकनीक का उपयोग करें। उस क्षण की याद करते हुए डा.संदीप ने कहा कि अत्यन्त विनम्रता पूर्वक उन्होंने श्री माताजी से प्रार्थना की कि अस्पताल खोलने और चलाने के लिए उन्हें कुछ उपकरणों की आवश्यकता होगी। **तब श्रीमाताजी ने कहाः**

हाँ, उपकरण पहले से ही मौजूद हैं। आप मेरी तस्वीर ले लो, केवल इसी उपकरण की आपको आवश्यकता है।" आश्चर्य पूर्वक डा. संदीप बोल उठे, "श्रीमाताजी मैं तो चैतन्य–लहरियाँ भी ठीक से महसूस नहीं कर पाता, किस प्रकार मैं लोगों को रोगमुक्त कर पाऊंगा ?"

अत्यन्त करुणापूर्वक श्रीमाताजी ने यह कहते हुए उसे ढाढ़स बंधायाः " रोगी को मेरे फोटो के सम्मुख बिठाकर आपने केवल उसके पीछे बैठना है और मुझसे प्रार्थना करनी है, "माताजी इस व्यक्ति को रोग–मुक्त कर दीजिए," यदि वह व्यक्ति रोग मुक्त होना चाहता है तो वह ठीक हो जाएगा!"

श्रीमाताजी के इस कथन के प्रति प्रतिक्रिया करते हुए एकदम से डा.सन्दीप ने स्पष्ट रूप से कहा कि ये सम्मान जो आपने दिया है, बेहतर होगा कि उनके पिताजी को प्राप्त हो और वही इस कार्य को करें। श्रीमाताजी ने पूछा, "परन्तु क्या वे बम्बई आएंगे?" "हाँ श्रीमाताजी मैं उन्हें इसके लिए मना लूंगा। यकीनन, "निश्चित रूप से, श्रीमाताजी, हम सब यहाँ आ सकते हैं, अपने माता–पिता को दिल्ली छोड़कर मैं अकेला यहाँ वाशी नहीं आ सकता।"

"बहुत बढ़िया तुम उन्हें लेकर आओ और वह केन्द्र को चलाएंगे, इस कार्य के लिए वही उपयुक्त व्यक्ति हैं।" (श्रोताओं की हँसी)

तो इस प्रकार से अन्ततः प्रो.यू.सी.राय, श्रीमती राय के साथ इस अन्तर्राष्ट्रीय सहजयोग शोध एवं स्वास्थ्य केन्द्र को आरम्भ करने एवं चलाने के लिए बम्बई आए और श्रीमाताजी की इच्छानुरूप मानवता की सेवा के लिए यहीं बस गए। ये परमेश्वरी इच्छा इस प्रकार से कार्यान्वित हुई।

बाद में डा. सन्दीप राय ने स्वास्थ्य केन्द्र के कुछ मुख्य कार्यकर्ताओं को कुछ शब्द कहने के लिए आमन्त्रित किया। अपना भाषण समाप्त करने से पूर्व डा. सन्दीप ने अपनी माँ श्रीमती लिली रॉय को धन्यवाद दिया। अत्यन्त प्रेममयी गृहलक्ष्मी के रूप में पिछले दस वर्षों में स्वास्थ्य केन्द्र आने वाले सभी लोगों की वो प्रेमपूर्वक देखभाल करती रही हैं। साढ़े छः बजे सायं पूजा आरम्भ होने से पूर्व सारी

सामूहिकता को एक अन्य आह्लादमय अवसर प्राप्त हुआ। सभी उपस्थित योगियों को 19 फरवरी 1996 को स्वास्थ्य केन्द्र के उद्घाटन समारोह के एतिहासिक क्षण का वीडियो देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उद्घाटन समारोह का आरम्भ श्री माताजी के मराठी प्रवचन से हुआ। इसमें श्रीमाताजी ने बताया कि किस प्रकार यह स्थान, यह केन्द्र बनाने के लिए उपयुक्त है। उन्होंने ये भी बताया कि बाईं विशुद्धि की पकड़ को किस प्रकार अग्नि तत्व (candling) से ठीक किया जा सकता है।

चैतन्य लहरियाँ अत्यन्त शक्तिशाली थीं मानो श्रीमाताजी इस पूजा में अपने बच्चों को आशीर्वादित करने के लिए, और अपना प्रेम प्रवाहित करने के लिए साकार रूप में मौजूद हों! सायंकाल का ध्यान इतना गहन था कि इससे कुछ रोगी तुरन्त ही रोगमुक्त हो गए! देवी की आरती के पश्चात् वातावरण इतना आनन्दमय और चैतन्य से परिपूर्ण था कि "जागो हे जगदम्बा" भजन जब गाया गया तो सभी योगी श्रीमाताजी की वेदी (Altar) के सम्मुख झूम–झूम कर नाचने लगे।

बाद में श्रीमाताजी के चमत्कारिक रोग निवारण से लाभान्वित रोगियों ने निराकार श्रीमाताजी के सम्मुख बहुत बड़ा केक भेंट किया, उन्होंने श्रीमती मधुर राय को स्वास्थ्य केन्द्र के लिए एक उपहार भी दिया। सारी सामूहिकता ने उस शाम को हुई कृपा वर्षा, चमत्कारिक किस्सों तथा पूजा प्रसाद का आनन्द लिया।

इस अवसर पर उपस्थित सभी सौभाग्यशाली योगी उस शानदार पूजा के सुन्दर ध्यान और हार्दिक आनन्द को याद किया करेंगे। श्रीमाताजी इस शानदार पूजा का आनन्द जो आपने हमें प्रदान किया है उसके लिए कृपा करके हमारे हार्दिक धन्यवाद स्वीकार कीजिए। अन्तर्राष्ट्रीय सहजयोग शोध एवं स्वास्थ्य केन्द्र सी.वी.डी. बेलापुर नवी मुम्बई भारत में प्राप्त हुई आपकी परमेश्वरी चैतन्य–लहरियों को हम संजो कर अपने हृदय में रखेंगे।

जय श्रीमाताजी

Gauvin Didier

(इन्टरनैट विवरण)

(रूपान्तरित)

एक रोगी का साक्ष्य

(मुम्बई–स्वास्थ्य केन्द्र 19.2.2006)

19 फरवरी 2006 को वाशी स्वास्थ्य केन्द्र में व्यक्तिगत रूप से मेरे साथ घटित हुए एक अनुभव को मैं आपको सुनाना चाहूंगा। यह कोई अद्वितीय कहानी नहीं है क्योंकि उस दिन रोग मुक्त होने की बहुत सी चमत्कारिक घटनाओं के विषय में हम सुन चुके हैं। यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है इसलिए यह सौ (और 8) प्रतिशत सत्य है।

केन्द्र में दो सप्ताह के सामान्य शुद्धिकरण के बाद पिछले वृहस्पतिवार (16.2.2006) को मैंने केन्द्र से चले जाना था परन्तु उसी दौरान कुछ घटना घटी। उसी दिन मैं बीमार पड़ गया। मेरी कमर में और शरीर के पूरे बाएं भाग में तेज दर्द था। एक सन्ध्या पूर्व मैं ठीक–ठाक था और चल रहा था। इतना दर्द! मुझे लगा कि चैतन्य–लहरियों की खराबी के कारण ऐसा हुआ, सारी नकारात्मकता ने शारीरिक दर्द का रूप धारण कर लिया था और मुझे झुकने, चलने और सीधा खड़ा होने के काबिल भी न छोड़ा था। मेरा शरीर नब्बे वर्ष या इससे भी कुछ बूढ़ा था– ऐसा कहना अतिशयोक्ति न था।

बिस्तर पर लेट पाना भी कठिन था। मेरे डाक्टर ने मेरा काफूर–उपचार किया जिससे मुझे थोड़ा सा लाभ हुआ परन्तु कुछ ही समय बाद दर्द पूरी ताकत से लौट आया। अपने जीवन में कभी मैंने दर्द निवारक दवाएं नहीं ली थीं परन्तु उस शाम बर्दाश्त करना कठिन हो रहा था अतः मुझे एस्परीन तथा कुछ अन्य दर्द निवारक लेने पड़े। फिर भी कोई लाभ नहीं हुआ। मुझे महसूस हुआ कि मुझे कोई शारीरिक संक्रमण है, मेरी रीढ़ में कोई कमी है। अतः मैं डाक्टर मधुर राय से मिला और उन्हें कहा कि मेरा एक्स–रे करवाया जाए। उन्होंने मुझे समीप के एम.जी.एम. अस्पताल परीक्षण के लिए भेजा। परन्तु वहाँ पहुँचकर मुझे महसूस हुआ कि ये आम डॉक्टर मेरी बीमारी के बारे में कुछ नहीं समझ पाएंगे। केवल बीमारी का कारण ही पूछते रहेंगे। मुझे लग रहा था कि किसी सूक्ष्म नकारात्मकता ने मेरे अन्दर शारीरिक दर्द का रूप धारण कर लिया है और ये लोग तो कुछ दर्दनिवारक देकर मुझे भेज देंगे। मुझे यहाँ आना ही नहीं चाहिए था। शारीरिक और मानसिक दर्द लिए हुए मैं वहाँ से वापिस आ गया और सोचा कि केवल श्री धनवंतरी ही मुझे आराम पहुँचा सकते हैं तथा ठीक कर सकते हैं। मुझे बेहतर ढंग से श्रीमाताजी की ओर चित्त लगाना चाहिए।

शनिवार प्रातः भी मैं दर्द के साथ उठा। कुछ

भारतीय भाइयों ने मेरी मालिश की, परन्तु दर्द ने मेरा पीछा न छोड़ा। क्या मैं अगले दिन की चिरप्रतीक्षित पूजा में भाग ले पाऊँगा ? रविवार 19 फरवरी के दिन दोपहर पश्चात् मैंने भजनों का आनन्द लिया। परिदृश्य में ध्यान सभागार के पीछे की दीवार पर श्रीमाताजी की बहुत बड़ी तस्वीर लगाई हुई थी। तीव्र चैतन्य–लहरियों के प्रवाह ने सभी को बाँध लिया था। ऐसा लगा मानो पूजा से पहले ही पूजा हो गई हो। इस आनन्द के बाद मैं अपने शरीर को घसीट कर पूजा के लिए बगीचे में पड़े बैंच पर ले गया और श्रीमाताजी से रोग मुक्ति के लिए प्रार्थना करने लगा। डा.सन्दीप राय ने जब अपने भाषण में श्रीमाताजी के शब्दों को दोहराते हुए कहा, " जो लोग ठीक होना चाहते हैं वो ठीक हो जाएंगे," तो ये बात मेरे जहन में चली गई।

क्या मैं ठीक होना चाहता हूँ। " निःसन्देह मैं ठीक होना चाहता हूँ , श्रीमाताजी।" पूजा के दौरान चित्त की स्थिति बहुत अच्छी थी, हम सब आसानी से सहस्रार तक पहुँच गए थे।

पूजा में क्या हुआ मैं नहीं जानता, परन्तु पूजा के अन्त में मैंने स्वयं को अन्य लोगों के साथ नाचते हुए पाया, पूरी तरह से ये भूलकर कि मुझे तो ठीक से चलना भी न था ..... दर्द गायब हो गया था ..... पूरी तरह से गायब ..... मैं विश्वास न कर पाया .... एक या दो घण्टे पहले मुझे स्वप्न आया था या अभी भी मैं स्वप्न देख रहा हूँ। नहीं, " कोई सन्देह न था। मैं हिल–डुल सकता था, नाच सकता था। दर्द का नामोनिशान न था! अपने हृदय में सम्मान–पूर्वक मैंने श्रीमाताजी के चरण कमलों में प्रणाम किया।

सर्वत्र प्रकाश था, सभी हृदय आनन्द से परिपूर्ण थे और पूजा के बाद के लयबद्ध संगीत में ऐसा प्रतीत होता था, मानो आत्मा ने हम सबको एक सूत्र में बाँध दिया है ..... मंच पर श्रीमाताजी (निराकार) हम लोगों को आनन्द लेते देख मुस्करा रहीं थीं।

जैसा मैंने बताया रोग निवारण की केवल यही घटना घटित नहीं हुई थी। कई अन्य रोगियों के रोग भी हाथों–हाथ दूर हो गए। श्रीमाताजी अपने आशीर्वाद की चमत्कारिक वर्षा हम पर करने के लिए आपका बारम्बार धन्यवाद।

या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्ति रूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो–नमः।
जय श्री आदि शक्ति माताजी श्री निर्मला देव्यै नमो नमः।

Govind D (Africa)
(रूपान्तरित)

योगेश्वर, श्री कृष्ण पूजा

लन्दन 15.8.1982

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज का महान दिवस हम सबके लिए खुशियाँ मनाने का है क्योंकि आज ही के दिन साक्षात् आदि पुरुष (Primodial Being) पृथ्वी पर श्री कृष्ण के रूप में अवतरित हुए। अपने प्रवचनों में मैंने उनके बहुत से पक्षों का वर्णन किया है। परन्तु इस आदि पुरुष का महानतम पक्ष ये है कि वे 'योगेश्वर' थे। वे "योग के ईश्वर" थे– योगेश्वर। परमात्मा से हमारे योग के वे स्वामी थे। उनकी आज्ञा तथा आदेश के बिना हम सहजयोगी नहीं बन सकते। वे योगेश्वर थे और सच्चा योगी वह होता है जो अपने अन्दर योगेश्वर को जागृत कर ले। 'योग' शब्द, जैसा हम समझते हैं, हमारे चित्त का परमात्मा से जुड़ जाना है। परन्तु इसके 'निहितार्थ' को हम अभी भी महसूस नहीं करते कि इसका 'तात्पर्य' क्या है। हमारे साथ क्या घटित होना चाहिए था ?

निःसन्देह आपको शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं। ज्यों ही आप आत्मा बनते हैं, आपको शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं। प्राप्त होने वाली शक्तियों में से एक है 'सामूहिक चेतना की शक्ति।' वह भी श्री कृष्ण की कृपा है कि आपको सामूहिकता का अहसास होने लगता है। आपके अहं और प्रतिअहं अधोगति की ओर खिंच जाते हैं और आप अपने पूर्व कर्मों एवं बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं और नए जीवन के नए युग का अंकुरण होता है। परन्तु 'योगेश्वर' की महानता क्या है, उनकी विशेषता क्या है ? वे आपके ईश्वर हैं, सभी योगियों के ईश्वर हैं, उनकी क्षमता क्या है, उनका स्वभाव क्या है कि उनके लिए सभी कुछ एक खेल है – 'लीला' है।

श्री राम के लिए यह सब लीला न थी। उनके लिए यह जीवन एक मंच था जिस पर उन्होंने ये दर्शाना था कि मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में अत्यन्त धार्मिक जीवन किस प्रकार यापन करना है। परन्तु श्री कृष्ण ये दर्शाने के लिए आए थे कि वे 'लीलाधर' हैं– वह व्यक्ति जो लीला करता है।

सभी कुछ एक लीला है। पूरा ब्रह्माण्ड लीला मात्र है। आदि–शक्ति, तथा तीन गुणों द्वारा रचा गया सभी कुछ, तथा ये तीन गुण, लीला के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। और अपने इस अवतरण में उन्होंने इसी बात की अभिव्यक्ति की। फिर भी 'योगेश्वर' क्या हैं ? 'लीलाधर' तो वे हैं जिनके लिए ये पूरा ब्रह्माण्ड लीला–मात्र है, जिसमें वे स्वयं धुरी पर हैं तथा पूरी परिधि उनके लिए लीला के सिवाय कुछ नहीं। क्योंकि सभी कुछ असत्य है, आपकी आत्मा के अतिरिक्त सभी कुछ असत्य है। ये सब तो एक मज़ाक चल रहा है, या आप कह सकते हैं कि एक नाटक चल रहा है, कुछ भी गम्भीर नहीं है। हमारे अन्दर केवल आत्मा ही सत्य है, बाकी सभी कुछ असत्य है। 'सत्य' कई प्रकार का नहीं हो सकता। संस्कृत भाषा में या तो 'सत्य' है या 'असत्य' है, सत्य के लिए दस शब्द नहीं हैं।

अतः जब ये घटित होता है, आपके अन्दर जब ये महान घटना घटित होती है, आत्मा से जब आप एकरूप हो जाते हैं तो आपको शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं, यद्यपि आप अभी तक उस अवस्था तक

पहुँचने के लिए परिपक्व नहीं हुए होते कि आपकी सूझ–बूझ उस अवस्था तक पहुँच जाए और आपका हृदय खुल जाए। ठीक है, आरम्भ में आपको शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं ताकि स्पष्ट सूझ बूझ के साथ आप श्रद्धा कर सकें। इसके अनुभव से यदि आपमें श्रद्धा आती है – तो इसी तरह इसका आरम्भ होता है। जब आप अपनी शक्तियों का उपयोग करने लगते हैं , उनकी अभिव्यक्ति होते हुए आप देखते हैं तो आप आश्चर्यचकित होते हैं कि किस प्रकार आप लोगों की कुण्डलिनी उठाते हैं, किस प्रकार उन्हें जोड़ते हैं, किस प्रकार आत्म–साक्षात्कार देते हैं और किस प्रकार लोगों के रोग ठीक करते हैं ! आपको हैरानी होती है कि यह किस प्रकार हुआ! तो हम कह सकते हैं कि यह आपके अन्तररचित है, जिसकी अभिव्यक्ति होने लगी है। परन्तु अभी तो बहुत कुछ बाकी है जिसकी अभिव्यक्ति होनी है, जिसे स्थापित होना है और जिसने आपको उन्नत करना है।

'योगेश्वर' का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष है। और वह पक्ष समझना हमारे लिए अत्यन्त आवश्यक है कि जब तक हम योगेश्वर द्वारा बताए गए मार्ग पर नहीं चलते तब तक स्वयं को पूरी तरह से स्थापित नहीं कर सकते। अतः श्रीकृष्ण ने कहा है कि "सर्व धर्माणां परित्यज्य, मामेकं शरणं व्रज"। सभी सम्बन्धों को त्याग दें। धर्म सम्बन्ध हैं, जैसे आपकी बहन–आपका भाई, ये धर्म है, जैसे स्त्री धर्म– महिला का कार्य।

इसके बाद हम कह सकते हैं 'राष्ट्र धर्म'। आज भारत का 'स्वतंत्रता दिवस' है। अतः हमारा राष्ट्र धर्म है, हम देश–भक्त लोग हैं। अपने देश के प्रति भक्ति राष्ट्र–धर्म है। फिर आपका 'समाज–धर्म है अर्थात् समाज के प्रति आपका कर्तव्य। फिर 'पति–धर्म' है, पतियों के कर्तव्य, फिर पत्नियों के कर्तव्य। हर व्यक्ति के कर्तव्य को धर्म कहा गया क्योंकि ये कर्तव्य आपने करना है। इस कर्तव्य से आप बँधे हुए हैं, ये सब आपके धर्म बन गए हैं। परन्तु उन्होंने कहा, "सभी धर्मों को त्याग दो, सभी कर्तव्यों को त्याग दो, केवल मेरे प्रति पूर्णतः समर्पित हो जाओ" – "सर्व धर्माणां परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।"

क्योंकि अब आप सामूहिक व्यक्ति बन गए हैं, अब आप उससे (परमात्मा) एकरूप हो गए हैं, अब वह आपके सभी धर्मों को देखता है, सम्बन्धों को देखता है, उन पर नज़र रखता है और उन्हें पावन करता है। अतः आप स्वयं को मात्र उनके प्रति समर्पित कर दें। यह बात उन्होंने केवल अर्जुन से कही थी, सभी से नहीं। ये बात उन्होंने सबसे नहीं कही थी क्योंकि सभी लोग तो इसके योग्य भी नहीं थे, या सबसे ये बात कहना उन्होंने उचित नहीं समझा। परन्तु मैं सोचती हूँ कि यह जानने के लिए आप उपयुक्त लोग हैं। इसलिए मैं आपसे बता रही हूँ कि अन्य सभी कर्तव्यों को भूल जाएं, हर चीज़ को भूल जाएं, अपने सामूहिक अस्तित्व, अपनी सामूहिकता के प्रति अपने कर्तव्यों को निभाएं।

परन्तु वे योगेश्वर हैं। ये मुख्य बात है। और उनके प्रति कर्तव्य निभाने के लिए योगेश्वर की पावनता को अपने अन्दर विकसित करना प्रथम आवश्यकता है। उनके लिए उत्कृष्टअवस्था आवश्यक नहीं थी, वे तो उत्कृष्ट थे। वे उत्कृष्टता का स्रोत थे। मानव की निकृष्ट प्रवृत्तियों से उन्हें उत्कृष्टता की आवश्यकता नहीं थी। उन्हें कुछ करने की आवश्यकता नहीं थी, माया से स्वयं को ऊपर उठाने के लिए कुछ भी करने की आवश्यकता न थी। पश्चिम में विशेष रूप से, जैसा आप जानते हैं, हमने

अपने लिए नर्क की सृष्टि कर ली है, एक वास्तविक नर्क की। सभी प्रकार की विकृत धारणाएं हमारे अन्दर हैं। योगेश्वर के लिए ये माया के अतिरिक्त कुछ भी नहीं , पूर्णतः गन्दगी, वो कभी सोच भी नहीं सकते कि ये चीज़े भी सम्भव हैं। ये सभी विकृतियाँ दुखद हैं।

आज उनके जन्म–दिवस पर मैं ये कहूंगी कि आज यदि उनका जन्म–दिवस है, और आज यदि उनका जन्म वैसे ही हुआ होता जैसे उस समय हुआ था, तो वे तुरन्त वापिस चले गए होते। उन्होंने कहा होता, 'नहीं, खेद है, मुझे कुछ नहीं लेना–देना, काफी हो चुका।'' और यदि वे पाश्चात्य संस्कृति से मिले होते तो उन्हें आघात पहुँचता, 'हे परमात्मा, नहीं, कुछ नहीं लेना देना। मैं यहाँ नहीं आ रहा। जिस समय उनका जन्म हुआ था उस समय चाहे जैसी परिस्थितियाँ रही हों, धर्म का अस्तित्व था, लोग ये जानते थे कि ठीक क्या है और गलत क्या है, आजकल की मूर्खतापूर्ण चीज़ें न थी, और वे योगेश्वर, पावन रूप में आए।

उनके विषय में एक कहानी है। एक दिन उनकी पत्नियों ने जाना चाहा। उनके लिए पत्नियों का क्या महत्व था ? कुछ नहीं, इस बात को देखें। उन्हें किसी पाप का दोष नहीं दिया जा सकता। विवाह उन्होंने इसलिए किया क्योंकि उन्हें अपने पाँच सिद्धान्तों या पंच तत्वों से विवाह करना था। तो स्त्री रूप देकर उन्होंने उनसे विवाह कर लिया। सोलह हजार महिलाओं से उन्हें विवाह करना पड़ा क्योंकि उन्हें सोलह हजार शक्तियों को अपनाना था और शरीरों के माध्यम से उन शक्तियों को संचालित करना था। ये शक्तियाँ स्त्री रूप में आईं। उनके लिए ये पति–पत्नी सम्बन्ध न था, एक पावन सम्बन्ध था। यौन सम्बन्धों का उनके लिए कोई महत्व ही न था, वे इनसे ऊपर थे। अतः प्रलोभनों और विकृतियों का तो प्रश्न ही नहीं उठता, इस बारे में सन्देह का कोई स्थान ही नहीं है।

कहानी इस प्रकार है कि एक बार उनकी पाँच पत्नियों ने किसी महान सन्त के दर्शन और आराधना के लिए जाना था। वह सन्त नदी के उस पार रहता था, उन्होंने वहाँ जाकर उसकी पूजा करनी चाही और इसके लिए उपयुक्त समय निकाला। जब वे नदी के पास गईं तो पाया कि नदी में बाढ़ आई हुई थी और इसे पार न किया जा सकता था। उन्हें लगा कि इस शुभ मुहूर्त में यदि वे सन्त की पूजा करने के लिए नहीं गईं तो यह अपशकुन होगा। उसी समय जाकर वे इस गुरु की पूजा करना चाहती थीं।

अतः वे श्री कृष्ण के पास गईं और उनसे पूछा : ''इस बाढ़ ग्रस्त नदी को किस प्रकार पार करें?'' श्री कृष्ण बोले, ''वास्तव में ? कोई बात नहीं। तुम जाओ और नदी से कहो– वह तापी नदी थी जिसे वे पार कर रही थीं– उन्होंने कहा, जाकर नदी से कहो कि यदि हमारे पति श्री कृष्ण 'योगेश्वर' हैं अर्थात् जो ब्रह्मचारी हैं– योगेश्वर वह व्यक्ति होता है जो कभी यौन गतिविधियों में लिप्त नहीं हुआ हो। यह सम्भव नहीं है। इस चीज़ के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता। अर्थात् लिप्त होते हुए भी अलिप्त, इसमें होते हुए भी इससे बाहर रहना, कमल की तरह। वे यदि इस प्रकार की गतिविधि में कभी लिप्त नहीं हुए, केवल तभी। ऐसा श्री कृष्ण ही कर सकते हैं, कोई अन्य नहीं। इसीलिए वे अवतरण हैं साधारण मानव नहीं। केवल अवतरण ही ऐसा कर सकते हैं। कोई मनुष्य यदि ये कहे कि मैं श्री कृष्ण हूँ इसलिए मैं ऐसा कर रहा हूँ , मैं वैसा कर रहा हूँ– आप जानते हैं बहुत से पाखण्डी लोग होते हैं,

आपने उनके बारे में अवश्य सुना होगा। वे कभी नहीं बन सकते। केवल अवतरण ही ऐसा कर सकते हैं। इसका अभिप्राय ये हुआ कि वे योगेश्वर ही अवतरित हुए थे।

तो उन्होंने जाकर नदी से कहा, "यदि वे योगेश्वर हैं तो कृपया उतर जाइए (subside)।" और नदी का जलस्तर कम हो गया। उन्होंने नदी को पार किया, गुरु की पूजा की और वापिस नदी पर पहुँची। नदी फिर चढ़ी हुई थी, वे उसे पार न कर सकीं। वे गुरु के पास वापिस गईं। केवल कोई अवतरण ही अच्छा और सच्चा गुरु हो सकता है। उन्होंने गुरु से कहा "नदी चढ़ी हुई है, हम इसे पार नहीं कर सकतीं।" गुरु ने पूछा, "तो तुम आई कैसे थीं ?" उन्होंने उत्तर दिया "श्री कृष्ण ने नदी से पूछने के लिए कहा था कि यदि वे योगेश्वर हैं तो आप उतर जाइए।" तब उस सन्त ने कहा, "ठीक है अब तुम जाकर नदी को बताओ कि यदि मैंने आपका दिया हुआ खाना नहीं खाया तो नदी आपको रास्ता दे दे।" उन्होंने ऐसा ही किया। यद्यपि वे इस बात पर विश्वास न कर सकीं क्योंकि उन्होंने स्वयं सन्त को काफी पकवान खिलाए थे।

"जो भी खाना हमने उनको भेंट किया, यदि उन्होंने कुछ नहीं खाया तो आप उतर जाइए।" और नदी का स्तर कम हो गया!

सारी बात का सार ये है कि इन मामलों में श्री कृष्ण आपके आदर्श हैं। ये नहीं कि आप स्वयं को सबका आदर्श मान बैठें, सहजयोगी ये बहुत बड़ी गलती करते हैं। एकदम से वे सोच लेते हैं कि अब वे श्री कृष्ण बन गए हैं, या सोचते हैं कि कुछ महान बन गए हैं या उन्होंने कुछ महान चीज़ आत्म–सात कर ली है! ऐसा नहीं है।

एक बात व्यक्ति ने समझनी है कि इस आदर्श तक आपको पहुँचना है। आपकी दृष्टि और गतिविधियाँ सभी इस ओर होनी चाहिए। इससे पूर्व यदि आप ऐसी चीज़ों , इस प्रकार की विकृतियों या मूर्खतापूर्ण यौन गतिविधियों आदि में फँस जाते हैं तो आपको पता होना चाहिए कि आप बहुत तेजी से पतन की ओर जा रहे हैं। यह एक प्रकार की भूत–बाधा है जो आप–पर कार्य कर रही है। वे आदर्श है– वे अवतरण हैं। आप अवतरण नहीं हैं और न ही अवतरण बन सकते हैं। वे प्रकाश हैं जो आपका मार्ग प्रकाशित कर रहे हैं, उस मार्ग को जिस पर आप चल रहे हैं। ये अवतरण आपको उस साम्राज्य में ले जा रहे हैं जहाँ वे सम्राट हैं, जहाँ वे प्रभु हैं।

वे ईश्वर हैं (श्री कृष्ण) , वे आपके ईश्वर हैं, आप ईश्वर नहीं हैं। परन्तु आप कम से कम योगी तो हैं। पहले हमें योगी बनना होगा, तब वे हमारे ईश्वर हैं, अन्यथा वे आप पर शासन भी नहीं करना चाहते। अतः हमें करना ये है कि सर्वप्रथम हमें योगी बनना है। योगी की प्रथम पहचान ये है कि अपने यौन जीवन में वह अत्यन्त पावन होता है। पूर्ण पावनता का होना आवश्यक है और कुछ समय पश्चात् व्यक्ति को इससे आगे बढ़ना चाहिए। अन्य लोगों से आपके सम्बन्ध , चाहे ये आपकी बहन हो, भाई हो , कोई अन्य पुरुष हो या महिला हो, पूर्णतया पावन होने चाहिएं। ऐसा होना अत्यन्त आवश्यक है।

अब भारत जैसे देशों में लोग अत्यन्त भ्रष्ट हैं, अत्यन्त भ्रष्ट, अत्यन्त–अत्यन्त भ्रष्ट। पाँच रुपये में आप किसी को भी खरीद सकते हैं। पैसे के मामले में वास्तव में भ्रष्टता है। परन्तु लोग इतने अधिक चरित्रहीन नहीं हैं, वे जानते हैं कि यह चरित्रहीनता है। वे जानते है कि चरित्रहीनता नैतिकता नहीं है।

पश्चिम में चरित्रहीनता आम बात है। उनके अनुसार 'नैतिकता' शब्द समाप्त हो जाना चाहिए। कहने से अभिप्राय ये है कि वहाँ पर नैतिकता जैसा कुछ भी नहीं है। जो जी चाहे करो, लोग अनैतिकता के बारे में सोचते ही नहीं। इसके बारे में वो बात नहीं करना चाहते, ऐसा करना विक्टोरिया काल (पुरानी) की बात मानी जाती है। कोई यदि, कह दे कि व्यक्ति को चरित्रवान होना चाहिए तो लोग सोचते हैं वह पाखण्डी हैं। वो ये बात सोच ही नहीं सकते कि वास्तव में मानव और नैतिकता के बीच कोई सम्बन्ध हो सकता है! यहाँ ये समस्या है। हमारे सम्मुख ये सबसे बड़ी समस्या है।

भ्रष्टाचार की आप अनदेखी कर सकते हैं क्योंकि आप यदि भ्रष्ट नहीं हैं तो ठीक है, परन्तु चरित्रहीनता ऐसी चीज़ है कि यदि आप चरित्रहीन संसार मैं रहते हैं तो इसका प्रभाव सभी पर पड़ता है। उदाहरण के रूप में कोई चरित्रवान महिला सड़क पर चल रही है और कोई कामुक पुरुष उसे देख रहा है तो जैसे भी हो, वह अपनी पावनता खो देती है। वह किसी को आकर्षित नहीं करना चाहती और न ही अपनी पावनता को खोना चाहती है, परन्तु जिस प्रकार से वह व्यक्ति उसकी ओर देखता है, यद्यपि महिला के बहुत सामान्य तरीके हैं, फिर भी कुछ सीमा तक उस पुरुष के चरित्र और पावनता में पतन के लिए वह जिम्मेदार है। एक छोटा बच्चा भी, जो बहुत साधारण है, अबोध बच्चा है, उसकी ओर कोई यदि अपवित्र दृष्टि से देखे, तो बच्चे के लिए भी अत्यन्त अपवित्र भावनाएं, उसके मन में आ सकती हैं। तो यद्यपि वह व्यक्ति स्वयं गन्दा है, तो भी हम यह नहीं कह सकते कि बच्चा प्रभावित नहीं हुआ। परन्तु एक प्रकार से वह पात्र (object) बन जाता है, एक प्रकार ..... जैसे आप कहते हैं , एक माध्यम जो किसी व्यक्ति को पतन की ओर धकेलती है।

एक सर्व–साधारण तस्वीर, जिसका इसमें कोई योगदान नहीं होता, कोई भी चीज़ , गन्दी भावनाएं दे सकती हैं। आजकल, मैंने देखा है, बहुत से प्रतीक आरम्भ हो गए हैं, जो मेरी दृष्टि में बिल्कुल भी गलत नहीं हैं। इनमें मेरी दृष्टि बिल्कुल कोई बुराई नहीं देखती क्योंकि मैं अत्यन्त पावन हूँ , मेरी आँखे देख ही नहीं सकती कि उसमें कोई बुराई है। परन्तु इन चीज़ों में कुशल कोई व्यक्ति तुरन्त कह उठेगा, ओह इसे देखो ! कहने से अभिप्राय है कि ये समझ पाना अत्यन्त असम्भव है कि मानव मस्तिष्क ने अपने चहुँ ओर किस प्रकार जाल बुन लिया है और स्वयं को तथा अन्य लोगों को नष्ट करने के लिए ये सारे प्रतिमान क्यों बनाए हैं ?

योगेश्वर की पूजा करने के लिए हमें ये समझ लेना आवश्यक है कि विश्व के सभी लोगों से हमारे सम्बन्ध पावन होने चाहिएं। अपने जीवन काल में उन्होंने बहुत सी लीलाएं की। जब वे अवतरित हुए थे तो पूरा देश धर्म की अटपटी धारणाओं में डूबा हुआ था। फ्रायड यदि वहाँ पर होते तो कहते, 'ये सब बेवकूफी है। इसमें क्या खराबी है ? करते जाओ।' श्री कृष्ण ने ऐसा कुछ नहीं किया। वे मूर्खतापूर्ण परम्पराओं और झूठी कट्टरता की जंजीरों को तोड़ना चाहते थे। परन्तु उन्होंने ये कार्य, सभी सम्बन्धों को पूर्णतः पावन रखते हुए अत्यन्त सुन्दर ढंग से किया।

लोग प्रश्न पूछते हैं, 'श्री माताजी, क्या राधा से उनका विवाह हुआ था ?' वो तो उनसे सदा–सर्वदा से विवाहित से विवाहित हैं, कोई बात नहीं। परन्तु वास्तव में उन्होंने यह विवाह उसी दिन कर लिया

था जिस दिन उनका जन्म हुआ। उनके पिता उन्हें नदी पर लाए और नदी के किनारे उन्हें लिटा दिया। तभी साक्षात् ब्रह्मदेव पृथ्वी पर प्रकट हुए। इसी कारण से श्री कृष्ण हमेशा पीतवस्त्र पहनते हैं। ये वस्त्र उनके शरीर के निचले हिस्से को ढकने के लिए श्री ब्रह्मदेव का आशीर्वाद है। कटि–वस्त्र है। यह प्रतीकात्मक है और यही कारण है कि वे हमेशा पीत वस्त्र धारण किए रहते हैं।

साक्षात् ब्रह्मदेव आए, श्री कृष्ण को पुरुष बनाया और राधा से उनका विवाह किया। एक बार पुनः वे बालक बन गए, बालक–सम दिखाई देने के लिए। कोई भी बाल सुलभ दिखाई दे सकता है। आपमें से कुछ लोगों को मैं सोलह वर्ष की आयु की लडकी दिखाई पड़ती हूँ , परन्तु में हूँ नहीं। कुछ लोगों के लिए मैं साठ वर्ष की हूँ , परन्तु मैं वह भी नहीं हूँ। **मेरी आयु शाश्वत है। मैं नहीं कह सकती कि मेरी आयु कितनी है। यह दो वर्ष भी हो सकती है या पूर्णतः आयु से परे भी हो सकती है, ये कुछ भी हो सकती है।**

अपने पूरे जीवन में उन्होंने जो भी किया उसे पूरी पावनता और सूझ–बूझ के साथ किया। तो पहले राधाजी से उनका विवाह हुआ बाद में जब बालरूप में वे आए ,जब वे शिशु थे, तो उन्होंने सभी प्रकार की लीलाएं की। इस प्रकार गम्भीरता पूर्वक बैठकर वे चीज़ों के बारे में नहीं बताते थे , परन्तु छोटी–मोटी शरारतों द्वारा उन्होंने उनके चक्रों को सुधारने और उनकी कुण्डलिनियों को उठाने का प्रयत्न किया। निःसन्देह, खेल में आत्म–साक्षात्कार दे पाना सम्भव न था। ऐसा नहीं किया जा सकता। मान लो मैं भी आपसे खिलवाड़ करुं तो आप आत्म–साक्षात्कार नहीं प्राप्त कर सकते क्योंकि सहस्रार के स्तर पर आपको पूर्णरूपेण मुझे पहचानना होता है।

इसका ("रासलीला") होना आवश्यक है। निःसन्देह आप अपने हाथ उठाकर लोगों को आत्म–साक्षात्कार दे सकते हैं, परन्तु आपको उन्हें माधुर्य के स्तर पर लाना होता है। बैठकर यदि आप कहें कि ठीक है, आप खेलते रहो, तो ये सब समाप्त हो जाएगा। आपको बैठकर ध्यान करना होगा, आपको ऐसा करना होगा। अतः कोई यह नहीं कह सकता कि हर समय यदि आप खेलते रहें,भजन गाते रहें या हर समय प्रसन्नचित्त, विनोद–शील अवस्था में बने रहें तो यह सहजयोग का अन्त है। ऐसा नहीं है। ये एक गम्भीर मामला है।

तो उन्होंने उन्हें आत्म–साक्षात्कार नहीं दिया, परन्तु उनके मस्तिष्क से इस तथाकथित धर्म के तनावों और कट्टरता की जंजीरों को कम किया, उन्हें ढीला किया। श्री कृष्ण चाहते थे कि लोग इस बात को समझें कि धर्म दासत्व नहीं है। धर्मातीत होकर आपको स्वयं धर्म बन जाना है। परन्तु योगेश्वर की पूजा शुद्ध हृदय से होनी चाहिए। मैं जानती हूँ कि इस वातावरण में ऐसा कर पाना कठिन है। आप बाहर निकलते हैं और कोई भयानक चीज़ सामने होती हैं! किसी भी पत्रिका का कोई पृष्ठ खोलें, वहीं आपको कुछ न कुछ वीभत्स (Horrid) दिखाई दे जाएगा। किसी भी विज्ञापन में पृष्ठ पलटते ही मुझे डिस्कोथैक जैसी मूर्खतापूर्ण चीज़ें दिखाई पड़ती हैं। आप क्या कर सकते हैं, उससे आप बच नहीं सकते। सभी कुछ ऐसा है, मेरा अभिप्राय ये है कि आप यदि उसे देखें तो सभी कुछ कितना स्थूल, गन्दा और घिनौना है। समस्याओं को बढ़ावा देने के लिए मनोवैज्ञानिक आगे आ गए हैं। अपने ही तरीकों से और कार्यों से वे स्वयं प्रभावित हैं, वे भूत–बाधित हैं और इसमें कोई सन्देह नहीं है कि

उनका नैतिकता–विवेक पूर्णतः भ्रमित है।

क्या आप जानते हैं कि फ्रॉयड के साथ क्या हुआ ? उसके अपनी माँ के साथ सम्बन्ध थे। वो ये भी न समझ सका, कहने से अभिप्राय है कि वो ये भी कल्पना न कर सका कि वह कितना अधर्मी , भयानक और नीच है! उसमें तो माँ से सम्बन्धों को समझने की पावनता भी न थी। इसकी कल्पना करें! उस व्यक्ति की इतनी स्पष्ट पृष्ठभूमि है जो दर्शाती है कि वह कितना गलत था। उसके अन्दर इतनी गन्दगी भरी हुई थी कि वह अपनी माँ को भी ठीक से न देख सका! अवश्य उसकी आँखों में कीचड़ या कुछ और पड़ा हुआ होगा कि उसने चीज़ों को इस प्रकार देखा।

मेरी चैतन्य–लहरियों से आप लोग काँप रहे हैं। योगेश्वर के रूप में जब हम श्री कृष्ण के बारे में सोचते हैं तो इसका अर्थ ये है कि हम योगी हैं और वे हमारे ईश्वर हैं। ईश्वर की स्तुति होनी चाहिए ..... आपको स्तुति करनी है, उनके (योगेश्वर) गुणों के कारण उनका गुणगान करना है, क्योंकि वे आपके ईश्वर हैं। अतः आपने उनकी स्तुति करनी है। हम उनकी क्या स्तुति कर सकते हैं ? आज उनका जन्म दिवस है और ऐसे महान दिवस पर हमें क्या करना चाहिए ? हमने ये निर्णय करना है कि वो हमारे ईश्वर हैं। वे ईश्वरी तत्व हैं और यदि वे हमारे ईश्वर हैं तो हमें यौन–सम्बन्धों तथा जीवन के प्रति स्थूल दृष्टिकोण, जो हमने विकसित किया है, को स्वच्छ करना है। आप इसे त्याग दें और फेंक दें। पूर्णतः। इस मामले में कोई समझौता नहीं हो सकता। अन्यथा आप योगी नहीं हो सकते, आप योगी हो ही नहीं सकते। हो सकता है कुछ समय के लिए आप शक्तिशाली हो जाएं, हो सकता है, क्योंकि मैं आपसे खिलवाड़ करती रहती हूँ। आपमें धारणाएं आ जाती हैं कि आप बहुत शक्तिशाली हैं। परन्तु ये सत्य नहीं है।

जिस प्रकार मेरा नाम निर्मला है, जिस प्रकार मेरा नाम पावनता है, आपको भी पावन योगी बनना होगा। कोई नहीं कहता कि आप विवाह न करें, कोई नहीं कहता कि अपनी पत्नियों से आपके उचित यौन–सम्बन्ध नहीं होने चाहिएं । ये बात सत्य नहीं है। परन्तु ये ऐसी चीज़ है जिससे दूर रहकर लोग इसे बिगाड़ देंगे। परन्तु एक अन्य महत्वपूर्ण बात ये है कि आपका चित्त यौन–आकर्षणों से पावन होना चाहिए। किसी भी प्रकार के। आपका चित्त ऐसी किसी भी चीज़ पर नहीं जाना चाहिए। देखिए, मेरे लिए, मैं अब वृद्ध महिला हूँ , मैं कोई ऐसी चीज़ नहीं देखती जो लोग प्रायः देखते हैं। ये आश्चर्य की बात है। मैं किसी चीज़ को देखती हूँ परन्तु मेरी समझ में नहीं आता कि क्या हो रहा है! लोग आम–तौर पर मुझ पर हँसते हैं, घर में उनकी समझ में नहीं आता कि मैं उस बात को कैसे नहीं देख पाई! परन्तु मेरी समझ में ये मज़ाक नहीं आते क्योंकि चित्त इन गन्दी चीज़ों पर जाता ही नहीं है। जब तक कोई मुझे बताए नहीं मैं इसे समझ ही नहीं सकती। उन्हें दस बार इसकी व्याख्या करनी पड़ती है।

तो मूर्खता और गन्दगी के ये सारे आधुनिक तरीके जो हमने एकत्र किए हैं, कृपा करके इनसे छुटकारा पा लें। हर सहजयोगी से बताना मैं आवश्यक समझती हूँ कि ये एक ऐसी चीज़ है जिसे सहजयोग में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। यदि आप ऐसे ही रहते हैं तो यौनानन्द नहीं उठा सकते। आप ऐसा नहीं कर सकते। इस देश में आप यौन सम्बन्धों का आनन्द नहीं उठाते । कोई भी नहीं।

केवल उस देश में, जिसमें लोग पावन हैं,

आनन्द उठाया जा सकता है। आप यदि इसका आनन्द उठा पाते तो एक महिला से दूसरी महिला की ओर, पुरुष से महिला की ओर, पुरुष से पुरुष की ओर, और फिर सभी गधों की ओर न दौड़ते और न ही ये सब कार्य करते। इन घिनौने विचारों के साथ योगी बन पाना असम्भव है। और फिर आप परिपक्व नहीं हो सकते, कोई सर्वसामान्य व्यक्ति भी परिपक्व नहीं हो पाएगा। भारत में 40 वर्ष का व्यक्ति परिपक्व पिता बन जाता है। आप लड़कियों को उसके साथ छोड़ दीजिए, किसी को भी उसके साथ छोड़ दीजिए, उसकी खोपड़ी में आएगा ही नहीं कि उनके बीच कुछ हो सकता है। एक बार विवाह होने के पश्चात ऐसा कुछ नहीं होना चाहिए। मेरा अभिप्राय ये है कि मैंने अपने दो दामादों को देखा है, उनके दिमाग में कभी ऐसे विचार आते ही नहीं। अतः अच्छी चीज़ों में अपने चित्त को लगाएं क्योंकि आपके ईश्वर योगेश्वर हैं।

श्री कृष्ण के दूसरे पक्ष का लोगों को ज्ञान ही नहीं है। ये लीला है, ठीक है। परन्तु वे संहार शक्ति हैं। वे विनाशकारी शक्ति हैं। ये अच्छी बात है कि अपने सारे आयुधों के साथ वे हमारी रक्षा के लिए आते हैं। परन्तु उनके पास सुदर्शन चक्र भी है। सुदर्शन , 'सु' अर्थात् शुभ 'दर्शन' अर्थात् देखना। वे हमें शुभ–दर्शन देते हैं। आप उनके साथ चालाकियाँ करें तो वो सब आपकी गर्दन पर आती हैं और तब आपको अपने शुभ–दर्शन होते हैं कि अब आप कहीं हवा में लटक रहे हैं।

अतः श्री कृष्ण का तरीका एक ओर तो ये है कि वे 'लीलामय हैं,' करुणामय हैं अपने भक्तों की रक्षा के लिए उद्यत हैं, धर्म की पुनर्स्थापना के लिए पृथ्वी पर अवतरित हैं। धर्म का जब पतन होता है तो उसकी पुनर्स्थापना के लिए वे आते हैं। 'यदा–यदा ही धर्मस्य– ग्लानिर्भवति' जब–जब भी धर्म की ग्लानि होती है– पतन होता है। परन्तु धर्म का अर्थ केवल भ्रष्टाचार नहीं है, केवल ईमानदारी और बेईमानी नहीं है। मूलतः इसका अर्थ मूलाधार है। यह अंत का आरम्भ है।

और वे संस्थापनार्थाय– पावन अवस्था में इसकी पुनर्स्थापना करने के लिए आते हैं। मानव को इस स्तर तक उन्नत करने के लिए वे पुनः पृथ्वी पर अवतरित होते हैं। उनका यही कार्य है। यदि हम सहजयोगी हैं तो उनके अस्तित्व के अंग–प्रत्यंग, हैं उनकी कार्यशैली के हम माध्यम हैं। अतः हमने धर्म को स्थापित करना है। परन्तु जिसके अन्दर धर्म ही नहीं है वह क्या धर्म स्थापना करेगा ? धर्म के पावन पक्ष को स्थापित करने के लिए वे पृथ्वी पर आए, रोमन कैथोलिक चर्च या पेंटाकोस्टल चर्च या हिन्दू धार्मिक गतिविधियों या इन हिन्दू मन्दिरों या इस्लामिक अवस्थाओं की तरह से नहीं। हमें धर्म को उसकी पावन अवस्था में स्थापित करना है। परन्तु हमारे अन्दर यदि धर्म है ही नहीं तो कैसे हम इसे स्थापित करने वाले हैं ?

विष्णु के स्तर पर वे हर बार धर्म की स्थापना करने के लिए पृथ्वी पर अवतरित होते हैं, परन्तु श्रीकृष्ण के स्तर पर वे योगेश्वर रूप में आते हैं। ये बात बहुत से लोगों ने सोची ही नहीं है। विष्णु के लिए योगेश्वर शब्द कभी नहीं कहा गया, कि वे योगियों के ईश्वर हैं, जैसे गणेश गणों के ईश्वर हैं। आप जानते हैं गणपति गणों को सम्भालते हैं और वो हमारे ईश्वर हैं। हमें उन्हें अपने आदर्श के रूप में स्वीकार करना है। इस सूझ–बूझ के साथ कि आज वो दिन है– रात को लगभग बारह बजे– भारत में भी अब रात के बारह बज गए होंगे– रात के इसी समय उनका जन्म हुआ था क्योंकि

प्रतीकात्मक रूप से यह सच्ची रात्रि थी, अत्यन्त भयानक परिस्थितियों में उनका अवतरण हुआ। जिन डरावनी परिस्थितियों में उनका जन्म हुआ, उनकी रक्षा हुई और फिर अपनी बाल्यावस्था में ही उन्होंने राक्षसों का वध किया। ये सारा कार्य उन्होंने इसलिए किया क्योंकि वे अवतरण थे। आप लोगों से कोई नहीं कह रहा कि जाकर राक्षसों का वध करो।

सहजयोग में क्या मैंने कभी आपसे कहा कि किसी राक्षस को मारो ? इसके विपरीत मैं तो यही कहती हूँ कि अपनी रक्षा करो। एक राक्षसी आई, उसका नाम पूतना था। अपने स्तनों पर विष लगाकर उसने बाल कृष्ण को अपनी गोदी में लिया और उन्हें स्तनपान कराने लगी। वो बहुत छोटे बच्चे थे। जब उन्होंने उसके स्तन से दूध पीना शुरु किया तो वह राक्षसी अपने असली रूप में आ गई और मारी गई।

निःसन्देह, आखिरकार वे अवतरण थे। क्या हममें से कोई ऐसा कर सकता है ? कहने का अभिप्राय है सहजयोगी। शैशवकाल में वे अत्यन्त नटखट थे। उन्होंने मिट्टी खा ली– न जाने खाई भी कि नहीं– उनकी माँ को सन्देह हो गया था बहुत नाराज़ होकर उसने कहा , " अपना मुँह खोलो, मैं देखना चाहती हूँ कि तुमने मिट्टी खाई है या नहीं।" उन्होंने अपना मुँह खोला और उनकी माँ को उनके गले में पूरा ब्रह्माण्ड घूमता हुआ नज़र आया, क्योंकि यह विशुद्धि चक्र है! वह इसे देख पाईं क्योंकि उनमें यह देखने की शक्ति थी। हर आदमी इसे नहीं देख सकता। जिनमें शक्ति है केवल वही देख सकते हैं। हममें भी ब्रह्माण्ड देखने की वो शक्ति नहीं है जो उनमें थी।

अतः हमें समझना है कि सहजयोगी बनते ही, सहजयोगियों की परीक्षा उत्तीर्ण करने से पहले ही, हमें ये शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं। विश्वविद्यालयों में जिस प्रकार होता है उसके बिल्कुल विपरीत। विश्वविद्यालय पहले आपको डिग्री देते हैं, प्रमाण पत्र देते हैं, तब आपको नौकरी मिलती है, और हो सकता है कि आपको नौकरी न भी मिले। यहाँ पर सर्वप्रथम आपको नौकरी मिल जाती है, आपको सारी शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं– पारितोषिक मिल जाता है, परन्तु डिग्री का मिलना अभी भी पक्का नहीं है। कोई भी सहजयोगी बनकर घूमने लगता है, अगले दिन मैं उसे किसी अन्य चीज़ के साथ घूमते देखती हूँ। मैंने देखा है, प्रमाणित सहजयोगी भी हैं। ये बाद में कुछ अन्य प्रमाणित चीज़ बन जाते हैं, परमात्मा जानते हैं कैसे ? तो यह सहजयोग की विशेषता है कि बिना सच्चा प्रमाण पत्र पाए आप सहज योगी बन जाते हैं। निश्चित रूप से ऐसा ही है। और जैसा आप जानते हैं ये प्रमाण पत्र भगवान ईसा–मसीह स्वयं देते हैं वो बिल्कुल चिन्ता नहीं करते। आसानी से वे प्रमाण–पत्र नहीं देते। वे हारने वाले नहीं हैं। सहजयोग के मामले में तो वे बहुत ही सख्त हैं, वे किसी को प्रमाण पत्र नहीं देनेवाले, पहले वे आपका आँकलन करेंगे। और उनका मूल स्वभाव क्या है ? अबोधिता । आपकी अबोधिता के अनुरूप वे आपका आँकलन करेंगे। आपमें यदि प्रतिअहं है तो आप कह सकते हैं, " ओह मुझे भूत ने पकड़ लिया था, और भूत ने ही ये सबकुछ किया है। तो वे कहेंगे, " ठीक है, 'प्रमाणपत्र लेने के लिए आप भूत के पास जाओ, मेरे पास मत आओ।'..... ..... और आप क्या कर रहे थे, श्री कृष्ण की तरह से साक्षी भाव से देख रहे थे ? इन सारी चीज़ों के होते हुए कभी–कभी लोग मुझे वचन देते हैं कि, "श्रीमाताजी ठीक है, अब हम परस्पर झगड़ेंगे नहीं, अब कोई

समस्या न होगी, विश्वास रखें हम अत्यन्त प्रेमपूर्वक रहेंगे।" और अचानक मैं पाती हूँ कि कोई स्नानागार के लिए झगड़ रहा है, साबुन के लिए या ऐसी ही किसी और चीज़ के लिए। सहजयोगी का आचरण ऐसा नहीं होना चाहिए।

सर्वप्रथम आपको सन्तुष्ट व्यक्ति होना होगा, महान गरिमाशील और धैर्यवान व्यक्ति अन्यथा आप क्या सहन करेंगे ? "मैं उसे बहुत प्रेम करता हूँ परन्तु उसे मेरा तौलिया नहीं लेना चाहिए था।" छोटी–छोटी चीज़ों को ही यदि आप तूल दिए चले जा रहे हैं तो अभी तक आप योगी नहीं हैं। वस्तुओं के लिए यदि आप लड़ रहे हैं तो आप बिल्कुल भी सहजयोगी नहीं हैं। इन चीज़ों का बिल्कुल कोई महत्व नहीं है, मैं किसी भी चीज़ के बारे में कुछ नहीं कहती, क्या मैं कभी कहती हूँ कि मेरे पास ये चीज़ होनी चाहिए, वो चीज़ होनी चाहिए, तुमने ये कैसे बनाया, यद्यपि कभी–कभी वह वास्तव में गलत और संहिता–विरोधी होता है! मैं कभी नहीं कहती कि आप ये केले क्यों ले आए हैं, ये अच्छे नहीं हैं, मैं इन्हें नहीं खाऊंगी। मैंने कभी ऐसा कहा ? कहने से अभिप्राय ये है कि जो फूल आप अर्पण करते हैं वो भी चाहे शुभ न हों, क्योंकि मैं जानती हूँ कि कुछ प्रकार के फूल पूजा में उपयोग नहीं होने चाहिएं, परन्तु मैं अपना मुँह नहीं खोलती। मैं यदि आपको बताती हूँ तो केवल इसलिए कि इसमें आपका हित है, मेरा नहीं।

तो इस दिवस पर, जो पूरे विश्व के लिए महान आनन्द एवं प्रसन्नता का दिन है, आपको एक बात जान लेनी चाहिए, कि ईसा–मसीह का जब जन्म हुआ था तब वे अत्यन्त तुच्छ स्थान पर जन्में थे, परन्तु जब श्री कृष्ण का जन्म हुआ तो परिस्थितियाँ अत्यन्त भयावह थीं। सहजयोगियों के मामले में भी आज वैसा ही है। निःसन्देह यह महान आनन्द एवं खुशी की चीज़ है कि वे अवतरित हुए और उन्होंने हमें अपनी विशुद्धि–शक्ति प्रदान की। परन्तु हमारे लिए ये जान लेना आवश्यक है कि हमारा जन्म एक अत्यन्त खतरनाक समय पर हुआ है। ये बात मैं बहुत बार कह चुकी हूँ। आज केवल एक कंस नहीं है, बहुत से कंस हैं, बहुत बड़ा युद्ध चल रहा है और यहाँ पर उस युद्ध के कार्यभारी आप हैं। परमात्मा ने आपको इसके लिए नियुक्त किया है, आप ही लोग हैं जिनके पास शक्तियाँ हैं और जिन्हें ये महान कार्य सौपा गया है। जन्म के पश्चात् श्री कृष्ण के पिता जब उन्हें टोकरी में डालकर और सिर पर उस टोकरी को उठाकर उफनती हुई नदी को पार कर रहे थे तो श्री कृष्ण का चरण–स्पर्श करते ही यमुना नदी उतर गई। बाढ़ग्रस्त नदी उतर गई।

इसी प्रकार से आपमें भी ये सभी शक्तियाँ हैं कृष्ण ने ये सभी शक्तियाँ आपको दी हैं, यद्यपि आपको इन शक्तियों की समझ केवल तभी आएगी जब भगवान ईसा–मसीह आपको सहज–योगी के रूप में स्वीकार कर लेंगे। और ये आवश्यक है क्योंकि आपको अबोध बनना होगा, अपने अन्दर पावनता लानी होगी। पिछली बार इस महान दिवस पर हमने यहाँ सोलह विवाह करवाए थे उनमें से अधिकतर सफल हुए। सभी नहीं, अधिकतर सफल हुए, और मुझे प्रसन्नता है कि उस दिन इतने अच्छे जोड़े आए। यह अत्यन्त मंगलमय था। विवाह आपको पावनता–विवेक प्रदान करता है। इसीलिए सहजयोग में विवाह महत्वपूर्ण है। परन्तु ये अन्तिम शब्द भी नहीं है क्योंकि यह सबके लिए शिकार का मैदान नहीं है कि मैं आपके लिए आज ये पति ढूँढ रही हूँ कल वो पति ढूँढ रही हूँ। ये चीज़ पूर्णतः

समाप्त हो जानी चाहिए। इसे सहज पर छोड़ दें। सहजयोग में पत्नियाँ या पति बिल्कुल नहीं खोजने है। ये कार्य छोड़ दें। आपने यदि ऐसा कुछ किया तो आपको हानि होगी।

खोज आदि न करें। समय आने पर मैं आपको बताऊंगी कि किस व्यक्ति से विवाह करना है। लोग तो यहाँ पर प्रणय निवेदन शुरु कर देते हैं! सहजयोग में इसकी आवश्यकता नहीं है, इसकी बिल्कुल आवश्यकता नहीं है। हमारे सम्मुख बहुत से उदाहरण हैं जिनमें इस प्रकार से विवाह तय हुए, उन्होंने विवाह किया और उनका विवाह बहुत सफल रहा। ऐसे भी लोग थे जिन्होंने प्रणय निवेदन किए, चुनाव किए, अनुमोदन किए, सभी कुछ किए और अन्त में पाया गया कि दो दिन के बाद वे तलाक के लिए खड़े हो गए थे। सहजयोग में यह स्वतः और तुरन्त होता है। आपको ये सब नहीं करना पड़ता, इन सारी चीज़ों से आपको क्या प्राप्त हुआ है ? ये तो स्वतः है। आपको इसकी चिन्ता नहीं करनी, इसके बारे में नहीं सोचना, ये नहीं कहना कि ओह, श्री माताजी मुझे उसके लिए एक लड़की खोजनी है।" आपको ऐसा कुछ नहीं करना, ये सब मुझ पर छोड़ दो, ये मेरी सिरदर्दी है। परन्तु जब एक बार आपका विवाह सहजयोग में हो जाता है तो आपको इसका अर्थ पता होना चाहिए, और आप दोनों को चाहिए कि इसे भली–भान्ति कार्यान्वित करें। यदि ये सबके हित के लिए है तो ये सबके हित के लिए होना चाहिए। ये ऐसा ही है।

आज के दिन मैं कहूंगी कि आइए शपथ लें कि हम योगेश्वर की पूजा करने का निर्णय करेंगे आपको उनकी पूजा करनी होगी– अर्थात् इन चीज़ों के विषय में हमारे सम्बन्ध स्वच्छ होने चाहिएं। इन चीज़ों से हम लिप्त नहीं होंगे, कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है। खाना खाना और अपनी पत्नी के साथ होना एक सा है– शरीर की आवश्यकता मात्र। परन्तु आप सड़कों पर नहीं खाते, क्या आप ऐसा करते हैं ? आप गन्दी प्लेटों में नहीं खाते, क्या आप खाते हैं ? आप स्वच्छ प्लेट लेना चाहते हैं। आप ऐसी प्लेट चाहते हैं जो स्वच्छ हो, और केवल आपने उपयोग की हो। ये प्लेट स्वच्छ होनी चाहिए। यदि आप अधिक स्वच्छ प्लेट ले सकते हैं तो आप इसे लेना चाहेंगे। यदि आपको चाँदी की प्लेट मिल सकती है तो आप इसे लेना चाहेंगे, सोने की प्लेट और भी बेहतर होगी। इसी प्रकार से हमारे अन्दर अत्यन्त पावन सूझ–बूझ होनी चाहिए कि यह शरीर की आवश्यकता है, उस शरीर की जो बहुत ही सूक्ष्म बन सकता है। अतः हमें सर्वत्र इसका विपणन, इसकी खोज आदि नहीं करते रहना चाहिए– ये ऐसा है, ये वैसा है, और फिर छोड़ देना। ये आप के पास विशेष रूप से आना चाहिए। सारी महान घटनाएं अचानक घटित होती हैं। जितना ज्यादा विचार–विमर्श करेंगे, परिणाम उतने ही बुरे होंगे। अतः धारणाएं न बनाएं, इसके विषय में योजनाएं न बनाए ये घटित हो जाएगा, ये इतना अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। इस प्रकार आपको काफी पावनता प्राप्त होगी, आपका अहं ठीक हो जाएगा।

मैं ऐसे व्यक्ति को जानती हूँ जिससे कोई विवाह न करना चाहता था और जब मैंने उस व्यक्ति का सुझाव दिया, जिसे मैंने कठिनाई से मनाया था, तो उसने उत्तर दिया कि " मैं उससे विवाह नहीं करना चाहती।" ये अजीब बात है! जिस प्रकार हमारा अहंकार कार्य कर रहा है, यह बड़ा अजीब है, क्योंकि जब हम दूसरे व्यक्ति को विवाह आदि के लिए देख रहे होते हैं, तो योगेश्वर के बारे में नहीं सोचते। ये नहीं सोचते कि योगेश्वर

ने ही हमारे सब कार्य करने हैं। हम सोचे चले जाते हैं कि हमने ये कार्य करना है इस प्रकार हम किए चले जाते हैं और अपने चित्त को पूरी तरह विक्षिप्त कर लेते हैं। "सर्व धर्माणां परित्यज्य, मामेकं शरणं व्रज"। अपने इस निर्णय को यदि आप परमात्मा पर छोड़ सकें तो बेहतर होगा। मैं आपको बताती हूँ कि यदि आप ऐसा कर सकते हैं तो आपने अपने अहं का दरिया आधा पार कर लिया है। इसमें कम से कम पचास प्रतिशत अहं का उपयोग तो होता ही है विशेष रूप से पश्चिम में। भारत में ये प्रश्न अधिक नहीं होता। क्योंकि यहाँ पर माता–पिता निर्णय नहीं कर सकते। कोई अन्य निर्णय नहीं कर सकता आपको स्वयं निर्णय करना पड़ता है। आपके लिए यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी और बहुत बड़ी बात है। तो मैं आपको बताती हूँ कि यदि स्वयं दूल्हा या दुल्हन छाँटने की जिम्मेदारी आप छोड़ दें तो आपकी अहं की समस्या पचास प्रतिशत समाप्त हो जाएगी। मात्र, इसे भूल जाएं।

शक्ति की इतनी बर्बादी। जब मैं युवा लोगों को ये सारे कार्य करते देखती हूँ तो सोचती हूँ कि काश, ये अपने जीवन का मूल्य, जीवन का सम्मान समझ पाते! श्री कृष्ण उनके ईश्वर हैं। वे हर किसी के ईश्वर नहीं हैं, केवल योगियों के हैं। कोई अन्य यदि 'हरे राम–हरे कृष्ण' जपने का प्रयत्न करेगा तो उसे गले का कैंसर हो जाएगा। कोई भी ऐसा व्यक्ति , जो योगी नहीं है, यदि उनका आह्वान करने का प्रयत्न करता है तो उसे गले की समस्या हो सकती है। तो श्री कृष्ण केवल आपको उपलब्ध हैं, वे आपके ईश्वर हैं। केवल आपके लिए वो प्रकट होते हैं। वे आपके अपने हैं। किसी ऐरे–गैरे नत्थू–खैरे के लिए वे कार्य नहीं करते। उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता , चाहे आप प्रधानमन्त्री हों, राजा हों या रानी। उन्हें तो केवल कोई योगी ही बुला सकता है, केवल योगी ही उनसे मदद माँग सकता है। उन्हें किसी और की कोई चिन्ता नहीं है। कोई योगी यदि सिफारिश करे, केवल तभी वे किसी अन्य पर कृपा करते हैं अन्यथा वे किसी की चिन्ता नहीं करते। वास्तव में वे आपके अपने राजा हैं, जो आपकी देखभाल करने के लिए हमेशा मौजूद हैं। जब–जब भी आप उन्हें बुलाते हैं तो वे आपकी रक्षा करने के लिए अपनी सारी शक्तियों के साथ दौड़े चले आते हैं। परन्तु आपको योगी होना होगा। आप यदि भगवान ईसा–मसीह द्वारा प्रमाणित योगी नहीं हैं तो श्री कृष्ण का आपसे कुछ लेना–देना नहीं।

अतः श्री कृष्ण तक पहुँचने से पहले, यद्यपि उन्होंने आपकी अबोधिता का ऑकलन नहीं करना, दरवाजे में भगवान ईसा–मसीह खड़े हैं। आप जब प्रवेश करते हैं तो ठीक है। परन्तु इस दरवाजे में प्रवेश करना भी कठिन है क्योंकि ईसा–मसीह तो आपको उठाकर बाहर फेंक रहे होते हैं।

श्री कृष्ण ने कहा है, श्री ईसा मसीह से उन्होंने कहा कि 'आप आधार होंगे, पूरे ब्रह्माण्ड का आधार।" अर्थात् अबोधिता ही ये आधार है, ये अबोधिता यदि आपमें स्थापित नहीं हुई है तो श्री कृष्ण आपकी सहायता नहीं कर सकते। तब वे लाचार हैं। आप क्योंकि योगी नहीं बनते इसलिए वे अब आपके ईश्वर नहीं हैं। जब हम कहते हैं, श्री माताजी आज्ञा चक्र यहाँ है और वे यहाँ हैं, ठीक है। जब आप आज्ञा चक्र को पार करते हैं तों वे यहाँ (आज्ञा) बैठे हुए हैं और विराट यहाँ (आज्ञा चक्र से ऊपर विराट का स्थान) बैठे हैं। अतः जब तक आप अपने आज्ञा चक्र को ठीक से पार नहीं कर लेते आप विराट तक नहीं पहुँच सकते। और योगेश्वर

तो विराट हैं। इसी तत्व की हमने पूजा करनी है, इसी तत्व की पूजा करनी है!

पूजा कर अर्थ यह नहीं है कि आप वही व्यक्ति बन जाएं। आप मेरी पूजा करते हैं, परन्तु आप 'मैं' नहीं बन जाते। जब आप पूजा करते हैं तो क्या होता है ? आप सारे अंधकार को अग्नि, जल तथा अन्य तत्वों में फेंककर समर्पित हो जाते हैं। अपना हृदय आप मुझे सौंप देते हैं। यही पूजा है। इसी प्रकार से आपने मेरे अन्दर के श्री कृष्ण, योगेश्वर की पूजा करनी है। मैं योगेश्वर हूँ। चीज़ें मेरे मस्तिष्क में बिल्कुल नहीं घुसतीं, इस प्रकार से मैं चीज़ों को नहीं देखती, मैं नहीं जानती कि ये प्रलोभन क्या है, ये आकर्षण क्या है ? मुझे बिल्कुल समझ नहीं आता। इसके विपरीत ये चीजें मुझे दूर करती हैं, इनसे मुझे घृणा आती है, उल्टी होती है। इन चीज़ों को सुनने के लिए मैं अपने कान खोलना नहीं चाहती, मेरे कान बहरे हो जाते हैं। ये मैं सुन नहीं सकती, गन्दे मज़ाक मेरी समझ में नहीं आते। इसके लिए मेरे पास मस्तिष्क नहीं है। मेरा मस्तिष्क समझने से इन्कार कर देता है। मैं गूँगी हो जाती हूँ, पूर्णतः गूँगी और बहरी। लोगों ने इन चीजों पर पुस्तकों पर पुस्तकें लिख दी हैं, मेरी समझ में नहीं आता कि उन्होंने क्या लिखा होगा! ऐसी चीज़ों में लिखने के लिए क्या है ?'

तो आज हमने ये समझना है कि हमारा व्यक्तिगत जीवन अत्यन्त स्वच्छ होना चाहिए। हर क्षण हमें अपना सामना करना है और अपने अन्दर देखना है कि क्या हम वास्तव में अपने अन्तःस्थित योगेश्वर की पूजा कर रहे हैं ? आइए अपने अन्दर वह पावनता विकसित करें केवल तभी अबोधिता हमारी आँखों में स्थापित होगी। हम अबोध बन जाएंगे, हमारी आँखें अबोधिता को दर्शाएंगी। उन आँखो का क्या लाभ है जो कभी टिकती ही नहीं ? आप ये भी नहीं जानते कि वे कहाँ जा रही हैं, अस्थिर आँखें, आप इधर–उधर देखते रहते हैं! अपनी आँखों पर भी आप विश्वास नहीं कर सकते। परन्तु जो आँखें अबोध हैं बाहर से कुछ नहीं लेती, वे केवल देती है, वे केवल देती हैं पावनता कहीं भी प्रवेश कर सकती है, अत्यन्त पावनी है, सुखद है और अत्यन्त सुन्दर है। हमें सुन्दर व्यक्ति बनना होगा।

आज मैंने ये सारी बातें इसलिए कहीं क्योंकि जिस प्रकार लोगों को ये बात समझ नहीं आती कि सहजयोग में यौन सम्बन्धों का पावित्र्य इतना महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से पश्चिम में, तो कई बार मुझे परेशानी होती है। लोग समझते ही नहीं। भारतीय लोगों के लिए इस प्रवचन का कोई अर्थ नहीं। वो तो सोचेंगे कि क्यों श्रीमाताजी अपनी इतनी शक्ति नष्ट कर रही हैं! क्योंकि वो नहीं समझते। परन्तु मेरे लिए ये बहुत महत्वपूर्ण है। जो भी कुछ मैंने देखा और सुना है, जो मैं चहुँ ओर देखती हूँ, उसीके संदर्भ में। मैं सोचती हूँ कि आज का सन्देश योगेश्वर का सन्देश होना चाहिए। आइए हृदय से योगेश्वर की पूजा करें। आज जब आप मेरी पूजा करेंगे तो यह योगेश्वर की पूजा होगी, किसी अन्य की नहीं।

परमात्मा आप पर कृपा करें।

(रूपान्तरित)